| | | |
|---|---|---|
| Hindi Ms. 8 H1 | | |
| G 721<br><br>738 | | गोविंद स्वामी के पद<br>११८ पत्रक ॥ ल० ५० ६ पं०प्र०पू.<br><br>ह० ल० |

738 5

श्रीनाथजीग्रथगोविंदस्वामीकेपदरकाहवीपत्र
ग्रथविभासके १०१ रसमसेनंदलला
१ ललनकीप्रीत १ ग्राजदेखीमन
१ मदनमोहनपी २ ग्राजललरसभरे
२ जंहाइनेनालाग २ प्यारोग्रतिविछन
३ जागेकृष्णज ४ लेऊंदोकाछनी

१ ४ रुंडमर्दिनीसमे अथरामकलीके ५
५ अहोरथमथनचो ५ हौंबलिबलिजांवो
६ आवतललनपिया ६ मोहनदेहबसन
६ ललनमोहनरसिक अथविलावलके ७
७ ललनननहींआजुजा ७ आजरवोरैईसिख
८ प्यारीकेमहलनेउठि ८ जानपापहोल
९ बलिबलिपाउधारी ९ चारपहरकेगाः

१० धनिरमकेलविला ग्रथ्यदेवगंधारके ३
११ मानिमानिनीमोह ११ कहुकहीनजा
१२ लालनमुरलीने ग्रथ्यरोडीके ५
११ देखोजमोहनमे १३ नन्नतरसदो
१३ नन्ननकुमुमिनवन १४ विमलकदवस
१४ नेदलालसगनाच ग्रथ्यश्रामावरी ५
१५ तुमब्रजरानीकेला ७ कोउनरंगरा ॥

२२ मोहनमिरखाली २३ घमनाचाटरोकीहे
२३ ग्रजकीबानक २४ वलिबलिग्राजकी
२४ सकलकलाय २५ नैनावहतिल १
२५ चितैमुसकानीहे २६ कुमरावेठे
२६ मंदरताकीहद २६ पायाझकाइ
२७ नैननलागीहोचट २७ नैनांरीलडकां
२८ ग्रबहीतेठोटामनद २८ नमयेंडोशेरो

२९ जहांतनमनयन
२ ३० हमारेगोकुलके
३१ नैंकहुचालीरीठ
३१ एसीफीतकहुन
३२ कहाभयोमघवमोरे
३३ वैठेलालगोवर्द्धन
३४ गजरीयाभ्रवरी

२९ ह्वांनीकोंजांवनी
३० ब्रजजनलोचन
३१ श्रीवल्लभनंदन
३२ चितवनरहस्स
३३ गोवर्द्धनगिरधारी
३३ जामेजेतोगुण
३४ श्यामसुंदरहरि॥

३५ अबहोयाजोरा ३५ बडूनतरहीसमूमय
ग्रथयागानटके ३६ मोहनतेनतितेनहि
३६ कोनमकूनित ३६ मीठीमीठीबातपन
३७ लालनबहूत ३७ मीतमधीतूहेनेपाई
३८ हसितहसितला ३८ कहोजहानलेहै
३९ नेनीमोहनकोम ३९ जोपमीविठलरूप
३९ कहोमेरवारे ४० नचलतेगालेगीनंदकु ४०

४ ४० माईरीआजमन ४१ प्यारीराधातेरीगवत
४१ मोहनमोहनीचा ४२ संदेसेवकैसेंहोप्यारे
४२ लालननहिनेका ४२ विनदेखेंमोहन
४३ अंगअंगमोहनमो· ४३ कैसेबललननमनमा
४४ आजबनिठनिलाल ४४ आजुबनेब्रजराज
४५ बरजतकोंनही ४५ हंमननमईवडभागि

५ ५० बननेबनेआवतमाई ५१ नचतेमोहनलालरंगो
५१ जसुमतिऊदरउट ५२ हमहिंब्रजलाहिले
५२ अधेयांवेदेहैंजुवग ५२ कदमचढ़काह्न
५३ आवतचारेवयेन ५३ मोहनगिरधरम
५४ ठगोरीचालीरीमेरो ५४ खेललअपनाईवे
५४ बनतेवनेअबतब्रज ५५ मोहनतिलकगोरो
५५ सखासंगाकरतकलो ५६ संपामसमकतफांड़े

अथश्रीरागकेपद ३ ५७ लालहिपारोछवि अति
५७ ढोंवलिनखुतमो ५८ गोपहेंहसंगनन्दतत
अथमलारकेपद ४ ५८ लालमेरीसंहेंरगहन
५८ लागिलोलउायेवृ ५९ ऊमरचलऊआगे
५९ गावनरसिकराय ५९ घणामहिंदेखिनावे
६० आराजनघणामजल ६० पावसनटंनटयोग्र
६१ हंदाबनकनकभू ६१ आज्जलालनरसम

९२ अवहींरंगरब्योम ९२ हिंकहंदानवे
९ ९२ कवकीवकतप्यारी ९३ मनरूपताप्यारी
अथहिंगोरेकेपद ५ ९३ तेसोहंदाबनतेसं
९४ फूलनरंगहिंगोरे ९४ रंगमहेलसिंहद्वार
९५ फूलनआईब्रजनार ९५ फूलतदपतसंदरा
अथहमीरकेपद १ ९६ वेरोवेरोब्रजनारीम
अथईमनकेपद १ ९६ मानरीमनायोमान

॥

६० बोलनचेनगोव ६० मांतिरीमांतिमरोज

६८ ऊवरकान्नूझा ६८ कनकऊसमश्राति

६८ मल्लीग्राजमोदन ६९ नेरसहागकोमहि

६९ कहीनपरेरसिक ६९ ऊलदसगंगवनी

७० लाडिलेलालवदसि ग्यकल्यानकेपद ९९

७० रसिकसिरोमनराग ७१ दंपतीरंगम

७१ ग्राजबनीग्रतिसारंग ७१ केसहूवरजन

| | |
|---|---|
| ७२ दिनहीह्नमश्रईगाई | ७२ ह्तमिउरीपीकह्नोत्रं |
| ७३ ललनमावकोह्नोल | ७३ नकतनकथुगथुगमिन |
| ७४ हेहेहेथोरीधूमवगां | ७४ कह्योमांनेज्ञोमोरो |
| ७४ कविकीनिहोकार | ७५ नेह्नलालमोमान |
| ७५ वेनेवजावतरीमोह्नन | ७६ मांनक्कुटगयोरी |
| ७६ कह्नकह्नतमवरेन | ७७ नेरीशिह्नोवलिव |
| ७७ हजनवलऊकद्मव | ७७ ह्नमसोमोवारकही |

७८ अतिरससमानेरीतेरेनेन अथमोरटकेपद १
७८ कान्हमोटेरकहित अथकान्हरोकेपद २८
७९ मोहनमाईनासिका ७९ आजकौबानक
८० आजमाईबनरीला ८० अथरमधुरस
८१ नैनछबीलेनरनम ८१ नवलनागरीसं
८१ रूपारसनेनकमल ८२ रंगमहलमेरगी
८२ प्यारीकमलवदन नेरो ८२ आवनराधिकाप्या

८

८३ ऐंहीगलीनमोहि ८३ नवलसखीसाज
८४ श्यामवनीहषभा ८४ हौंतोमोमनकेदाक
८५ लालनमनायोमा ८५ मदनमोहनदेख
८६ देऊलालयदुरी ८६ वरजोवरजोवरजो
८७ कोनदानहीनो ८७ ननननामसंगरहि
८८ सदरसवश्यागमं ८८ गीरिधरकोनमह्म
८९ नेकहुख्यालीरी ८९ देखोदेखोमुरली

५० धनहरिदासराई ५० मृतमोमखमेलदे
५१ कृजमदूलमोरंग ५१ बलि बलि बलि बलि
अथ केदारो के पद ५२ ५२ नेकसहनाथ्रोहोमृर
५२ कृजमदूलमेदेल ५३ मोहनमोहनीसो
५३ श्यामकपोलनमे ५४ मोननकीजेरीप्रि
५४ मदनमोहनवे ५५ मोहनमृखारविंद
५५ चंदनचंदनह्लदाइ ५६ आजसखीअतवेदेरी

१०२ आवतहैवननेब्रज १०३ खरकदुहायेआव
१०३ सोभाकहैनजाये १०४ आऊमेरेगोकुल
१०४ केसरतिलककल १०४ आनगहांओबल
१०५ अहोपियकेसैक्रोध १०५ बियानताबियनभजानी
१०६ कहाकहिवरतो १०६ मेरोमनमोह्योरी
१०६ गारबगहेलीरा १०७ चेरोहोंलालआपनी
१०७ आवीयनिहोला १०८ देखनरूपटगोरी

१०

१०८ मोहनमहनीमो १०८ रसभरेपियप्यारीवे
१०९ कौनपठ्याईनमा १०९ अंगअंगमहरलाल
११० वनतेबनेआवतगो ११० बोलतबलिब्रजराज
१११ अंगअंगमनकोव १११ कहाकहोमोहनमुरारी
११२ पीठेमाईलालन ११२ रायगीरधरनस ११४ को
नकाजमाईरी ११३ भलेकहतलल ११४ मानगढकोहू
नही ११४ नेदनंदआज ११५ सखीहोअलावबी ३
नि सूचीपत्र संपूर्णम ॥

धं ७३८

१५

॥श्रीगोपीजनवल्लभायनमः॥ अथगोविंदस्वामीकेपदलिख्यते॥ ॥रागविभास॥ जतिताल॥

रसमसेनंदलल्यारे॥ आएहोउगिभोर॥ अरुननेंनबेंन अटपटे भूखनदेखियत अधरनिरंगभारे॥ ॥१॥ कैतवबादकरतगुसांईतहांजाऊजाकेहोअतिप्रानप्यारे॥ गोविंदप्रभुभलेजुभलेजानिपाएजैसेंतनचूपामतेसेंमनकारे॥ ॥२॥ ॥१॥ ललन

॥गोविं०॥

॥१०॥ कौशाति[?]समोली॥ एकरसनां कहा कहूंसखीरी॥ हसनेखेलनेचितवनिजुछबीली॥ अमृतबचन मृदुबोली॥१॥ अतिरसभरेमदनमोहनपियअप नेकरकमलखोलतबंदचोली॥ गोविंदप्रभुकी होंबकतकहांलोंकहोजेजेबातेंकहीमोसोंअप नोंहदोखोली॥२॥ ॥२॥ रागबिभास॥ आजुदेखी रीमनमोहनएबलवीरराजें॥ मदनमोहनपिय

मनिमंदिरतेंबैगेनिकसिआइछाजें ॥१॥ लटपटी
पागमरगजीमाललपटानमधुपमधुकाजें ॥ गोविं
दप्रभुकेसिथलनेनदेखतबिथकिकोटिमदनला
जें ॥२॥ ॥३॥ ॥रागबिभास॥ मदनमोहनपिय
भयोभोर ॥ प्राचीदिसानहीदिसनदेखियतअसतसु
नियतनहींबनखगरोर ॥१॥ ग्रहितकंठपरस्पर
दंपतिप्रियविश्लेषकरतअतिजोर ॥ गोविंदप्रभुपी

।।गोविं।। ।।२।।

परसिकसिरोमनिप्याराकेबचनलीयोचितचोर

।।१।। ।।छे।।रागबिभास।। आजुलालरसभरेबैठे

बनिकसिछाजे।।सुधिनकछूरी गातप्यारीप्रेम

मगनां।।लटपटीपागअरुसिथलविजरवारुउ

पटतउरहारप्यारीकंठलगनां।।२।।आलसअरु

नरसभरेरीबिलोचनभरिभरिआवतप्रियसि

अनुरंगनां।गोविंदप्रभुपीयजानिसिरोमनिरं

गरसवैभोरेनिजगनां॥ २॥ ५॥ रागबिभास॥ ज
हांइंहें नाठगततहांइंतासोंरवगतःपंगःअंगमा
धुरीजुबरनीनजाइ॥ सुभगभालभुवकपोलना
सिकादेखतरहेलुभाइ॥ १॥ हसतदालनमुखह
सनजुन्हाइहोंयहछबिकहाकहोंदेखिधोरीआ
ई॥ गोविंदप्रभुकीसुंदरबानिकपरबलिबलिजा
ई॥ २॥ ६॥ रागबिभास॥ अठताला॥ प्यारोअतिबि

चिह्ननबसकायेतेंसुहागुरी।।विविधकुसुमसु
बाससीतलसिंगारचीतामेंमदनमोहननि
सिजागुरी।।१।।बैठेकुंजकेद्वारतुवपथजोवतभ
रिभरिलोचननेंनबिसालतुमपनुरागगुरी।।दूती
केबचनसुनिप्रेमव्याकुलभईमिलिजाइगोविं
दप्रभुकोंमेटिबिरहहदैदागुरी।।२।। ७।।राग
बिभास।।जागउहोब्रजमोराबोलेइहिंप्पेसमर

कोऊसोवैहो ।। गावैंगुनगोपालग्वालिनीहरखि
तहसौबिलौवैंहो ।।२।। गोदोहनधुनिपूरिरह्यो
ब्रजगोपीदीपसंजोवैहो ।। सुरभीहूंकिबछरुवा
जागेअतिमिरवमारगजोवैहो ।।३।। बेनुमधुर
धुनिमऊवरिबाजैबैतगहेंकरसेलीहो ।। अपुनी
गाइसबग्वालडुहतहैतुम्हारीगाइअपकेलीहो ।।
४।। जागेकृष्णजगतकीजीवनिअरुननैंनमुख

गोविं ॥ ४॥

ओहै हो॥ गोविंद प्रभु जु उहत है धोरी गोप बधू म
नमोहै हो॥ ६॥ ॥ २८॥ राग बिभास॥ जति ताल॥
लेऊ हो काछिनि तेरी द्वार॥ पक्कर खजूर जंबु बदरी
फल॥ चरिका जूथ संग ब्रजमोहन चोकें करत
विहार॥ १॥ सुंदर कर जनुनी कनो दीयो धाए ले
सुकुमार॥ हीरा रतन सपूरन भाजन ऐसे पर
मउदार॥ २॥ लीये [illegible] लगाइ उदर सो खात खा

तचलेमीगेपरमरसाल॥ जहींगुणिन्हीमारतगोविं
दकोंहसतहेंसावतग्वाल॥३॥ ॥छ॥ रागबिभास॥
अथताल॥ इंदुकुमुदिनीसमेटीभूतचकवनित्रि
यभेटीमुकुलितअलिसरसकमलमुकुलितभ
एनलिन॥ भयोप्रातमुक्तगातसियरेलागेबोले
तमचरदीपज्योतिभईमलिन॥४॥ कैसेंकैजैंहों
रसिकराइधोरवगोपउहूतगाइजागेब्रजवासी॥

गोविं

५

मोहिंजातदेखिहैंगलिन॥ गोविंदप्रभुप्रेममगन
दंपतिअतिकंठलगनबढाएछिपाफिरिकेंसखि
पच्छिमचलिनसकेन॥ ६॥ १०॥ रागरामकली
अहोदधिमथतघोखकीरानी॥ दिव्यचीर
पहिरेंदछिनकोकटिकिंकिनीरुनझुनबानी॥
॥१॥ सुतकेकर्मगावतिआनंदभरिबालचरित्र
जानिजानी॥ श्रमबिंदुराजेबदनकमलपरमन

ॐसर्द बरखानी॥ १॥ पुत्रस्नेह चुचातपयोधर
अतिपुलकितहरखानी॥ गोविंदप्रभु घुटरून
चलिआए पकरी रईमथानी॥ ३॥ ॥ रागगरा
मकली॥ जहिताल॥ होंबलिबलिजाउंकलेऊ
कीजे॥ खीरखांड घृतअतिमीगे है अबकोकोर
बछलीजे॥ १॥ बेनीबढेसुनोनंदनंदनमेरोक
ह्योजोपतीजे॥ ओटोद्धसद्यधौरीकोसातघूट

गोविं
६

जोपीजे ॥१॥ वारनें जाऊं कमलमुखसुंदरअंचरा-
प्रेमजलभीजे ॥ बऊस्यौं जाइखेलो यमुनातटगोविं
दसंगकरिलीजे ॥३॥ ॥ रागरामकली ॥ आव-
तललनुपियारसभीनें ॥ सिथलअंगडगमग-
तिचरनगतिमोतनिहारखरचीन्हे ॥१॥ पारिजात
मंदारमालनलपटातमधुपमधुलीनें ॥ गोविंदप्र
भुपियमहांजाऊजहांरक्षधरदसनछतकीनें ॥२॥

॥३॥ रागरामकली॥ मोहनहेऊबसमनहमारे॥ जा
इकहेंगीब्रजपतिआगेंकरतेअपनीतिलसारे॥१॥
तुमब्रजराजकिसोरलाडिलेअसतुसबहिनकेयां
नप्यारे॥ गोविंदप्रभुपीयदासीतुम्हारीसुंदरवर
सुकुमारे॥२॥ ॥६॥ रागरामकली॥ तालचर्च
री॥ नृततमोहनरसिकरसिकनीसहितगटग
तततथेईतततथेईतता॥ मृदंगधकुमुधकुमुधकुमु

गोविं॥
॥७॥ तालअपंगमिलिभ्रूतिरेतमधुपमधुपमत्ता॥२॥ क
टिपारोसिरपीतअतिलालकाछिनीबनीकिंकि
नीझिनिझिनिगतिलेतगावतसुरसपत्ता॥गोविं
दप्रभुगोपबालककरतजयजयप्रेमअनुरत्ता
॥३॥५॥ रागबिलावल॥जतिताल॥ललनत
हीजाऊजाकेरसलंपटअपति॥अपतिआसनेन
हेखियतरसभरेप्रगटकरतप्यारीरति॥१॥ अध

ररसनखतवसनपीकसहअरुकपोलश्रमबिं
दुदेखियति॥नखदेबनितनलिखतश्यामपट
जयपताकरनजीत्यो रतिपति॥२॥कैतवबाउ
तजऊपियहमसोंजेमेईतनश्यामतेसेईमन
होऊतति॥गोविंदप्रभुपियपायसंवारऊगिरत
कुसुमसिरमालति॥३॥ ॥१॥रागबिलावल॥
आजुखरेईसिथलदेखियतहोरसभरेलाल॥

गोविं०॥

टी॥ सबनिसिजागेऽसतिसिथलऽसरसनरोऽसंबुजनैंनबिसाल॥१॥ सिथिलभूखनकटिबसनसिथिलऽसतिसिथिलमरगजीमाल॥ लटपटीपागसिथिलअलकावलिगलितकुसुमगुलाल॥२॥ सिथिलसिखंडसीसलटकिरहेआएभोरडगमगतचाल॥ सिथिलबेंनकलुकहतआंनकीआंन॥ गोविंदप्रभुपियपहोंबेहाल॥३॥ ॥२॥ ॥

॥ राग बिलावल ॥ प्यारी के मदल तें उठि चले भोर ॥ सखी वृंद अवलोकि सग्रसिथित ढकत नील कंचुकी पीत पट छोर ॥१॥ राधा चरित्र विलोकि परस्पर हहास अरु तउ न मुख मोर ॥ गोविंद प्रभु ले चले दृग आटै नागर नवल सभा चित चोर ॥२॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ पट ताल ॥ जानि पाए हो ललना बलि बलि ब्रजनृपति कुंवर ॥ जा के

गोविं॰ ॥
४९ ॥

विवसनि सिजा गिआएतहीं अनुसर ॥ २ ॥ अ
पनी प्यारी के रति चिन्ह हमहीं दिखावत आ
एहेत लोंज़ दादे पर ॥ गोविंद प्रभु सांवल तन
तेसेई होमन जन महीं ते जुवति प्रान हर ॥ ३ ॥ ॥

॥ ध ॥ राग बिलावल ॥ इकताल ॥ बलि बलि पा
उ धारी एआजु कछु मेरोई लहनो ॥ ब्रजन्ट पसु
त मोरे आए हो रस भरे ॥ भई बडी बार पाउ धारि

येहमनिजीयेबास्यो॰पगेरेज्ञाबासेबीराले॰आ
गेधरे॥१॥कहिनसकतिएकबातजाकेंनिसि
बसेताकेबसनपलटिपरे॥गोविंदप्रभुपिय॰
जांनिसिरोमनिकैहेबलदाऊकेहरे॥२॥ ॥५॥
॥रागबिलावल॥चारिपहररसरंगकीनेरंगभी
नेहो॥१॥अधरनिरंगलागतफीकोरंगभीने
हो॥मिलिगयोतिलकुलिलाटलाटरंगभीनेहो

गोविं॰ ॥

॥ १० ॥ ॥ ॥२॥ कसूंभी पाग सिर लपटी रंग भीने हो ॥ उर मर
गजी माल लाल रंग भीने हो ॥३॥ केस सिथिल बर
केस सिथिल रंग भीने हो ॥ सिथिल भए सब गात
लाल रंग भीने हो ॥४॥ गोविंद प्रभु छबि निरखि
हो रंग भीने हो बिबस भए ब्रजबाल लाल रंग भी
ने हो ॥५॥ ॥६॥ राग बिलावल ॥ रति रस के लि
बिलास लाल रंग भीने हो जागत सब निसि गति भ ॥१०॥

ई रंगभीनेहो ॥ भलीकीनी भलेआएप्रातलाल
रंगभीनेहो ॥१॥ बोलतबोलप्रतीतकेरंगभीने
हो ॥ सुंदरसावलगातलालरंगभीनेहो ॥ पिया
अधररसपानमत्तरंगभीनेहो ॥ कहतकहूकीक
हूबातलालरंगभीनेहो ॥२॥ अतिलोहितडगर
गमगे रंगभीनेहो ॥ मनकुंभोरजलजातलालरं
गभीनेहो ॥ चालसिथिलभुवभालसिथिलरंग

गोविं

१२ भीनेहो ॥ ससिमुखसिथिलजंभातछालरंगभीने
हो ॥ ३ ॥ केससिथिलबखेससिथिलरंगभीनेहो
वहिक्रमासिथिलसिरातलालरंगभीनेहो ॥ गोविं
दप्रभुनंदसुतकिसोररंगभीनेहो ॥ ब्रजनायक
विख्यातलालरंगभीनेहो ॥ ४ ॥ ७ ॥ रागदेवगं
धार ॥ स्पगताल ॥ मानिमानिनीमोहनहारगढे
तेरीतोप्रकतिऽपांनेपीयकीपीरनजानेबातेंबऊत ॥ ११

उक्राने सों त्यों तेऽपागरे कपाट दीये गाढे ॥१॥ बरि
खायू निकारी तो सों वहि लग भारी ऐसे लाललु पर
तन मन धन प्रान वारि फेरि आंनदी जे काढे ॥ सुन
त वचन प्यारी कंठ लागि गिरि धारी ॥ गोविंद प्रभु को
हृदे प्रेम जल सों बुझायो आए विरहानल दाढे ॥
२॥ ॥ ॥ राग देवगंधार ॥ परताल ॥ कछु कही
न जात तेरी ज्ञन की विकट बात आंन आंन प्रकृति

गोविं ॥

॥१२॥ कैसें बनि आवैं जो तूं डार डार तो हों री पात पात ॥ ॥१॥ अब कहा कहत सो ई जाइ कहो प्रीतम सों छांड़ि दै ऊ इत उत पांच सात ॥ अब ए तें परगो विं द प्रभु सों मन मनाई तेरी बात नि बात भयो प्रात ॥२॥ ॥ राग देवगंधार ॥ पद ताल ॥ लाजन मु रली ने कुं सुनाई पे ॥ विनती करप्यारी की सखी जानति हौं सकल गुन निसिर मोरटी कौ री जिति ॥१२॥

तातेंघोसवराजकुमारहमहिहंजोतांनहेसुनाईये
॥१॥जैसेंखगमगहगपशुलताबेलीमोहेएसेंहमा
रीमतीनकोमनुसिखाइये॥गोविंदप्रभुसकलकला
प्रवीनतातेंहमारेश्रवननिसुखउपजाईये॥२॥
॥३॥रागटोडी॥देखोजूमोहनमेरीकाहूईंडुरीड
राई॥सधेंसधेंबेगिकिनिमांनोवहकोनकीचतुरा
ई॥१॥कछूजूपरस्परकरतसेनाबेनीजूतादिमोहि

गोविं

१३ किमिदेऊदिखाई ॥ सबसमेटिइहां कहतकोंनमोंता
कीफेटपकरिकिनधाई ॥ २ ॥ आपेंहोइबेगिसोनमा
नेताहिब्रजराजदुहाई ॥ गोविंदप्रभुकछुहसतब
ऊलसेमेरेजांनतुमहीहेचुराई ॥ ३ ॥ ॥ १ ॥ रागटो
डी ॥ ॥ बृंदतरसदोऊभाईरंग ॥ सुलपसंचगतिलेते
गगतकटिधिकटिधूमधमबाजतमृदंग ॥ १ ॥ क
न्कवरनटिपारोसिरकमबरनकाछिनीकटिबन

जुधातअतिविचित्रमोहे श्यामअंग॥ गोविंदप्रभु
जुतिलोकविमोहितदेखतगगेसेगढेकोटिअ
नंग॥२॥ ॥श्रीरागटोडी॥ नृत्तकुसुमितबनसुं
दरसुजांनखडजरिषभपंचमसुरअलापतलेत
विकटअवघरतान॥१॥ श्रीरामासखासंगअति
रसभरे उघटतगगततततततथेईथेईपुरव
तमान॥ सकलकलाअतिरसिकराइगोविंदप्रभु

गो०वि० ॥

६६ ॥ पूरतरसतानविताना ॥१॥ ॥३॥ रागटोडी ॥ जतिताल ॥ बिमलकदंबमूलअवलंबितगाढेहैंपिय।

भानुसुतातटसीसटिपारोकटिलालकाछिनी।

उपरनांफहरातपीतपट ॥१॥ पारजातअवतंस

स्रुतउरसुभगसेहरोबनीअलकछटा बिमल

कपोलकुंडलकीसोभामंदहासनजीतेकोटिम

दनमट ॥१॥ वामकपोलवामभुजपरधरिमुर। ६७

 

श्रीब्रजावततांनविकट॥ गोविंदप्रभुकोंजुभीरा
माप्रभृतिसबकरतप्रसंसाजयनागरनट॥३॥
॥ ॥६॥ रागटोडी॥ नंदलालसंगनाचतिनवल
किसोरी॥ खडजज्ञरवतगधारसम्मसुरमधुम
धिमतारलेतग्गतततहोहोरी॥ १॥ जहांरसि
कगिरिधरझाबुडघटततग्गथुगनिथुंगथोरी
गोविंदप्रभुबनीनवनागरीराधारूपामसरसजो

।गोविं।

।१५। री ।२। ।५। राग आसावरी ।। तुमब्रजरानीके
लाला।। दधिमथतिसुहाईकेलाल ।। छ० ।। दि
व्यकनककोपालनोलालरतनजटितनगहीर
।।गजमोतिनकोरूमकाहोलालऊपरदछिन
चीर ।१। घुटुरुनिचलतसुहावनेलालपदनू
पुरकोनाद ।। कटिकिंकिनीरुनझुनकरेलालसु
नतजननिअहलाद ।२। आधेआधेबचनसुहा ।१५।

30

बनेआलसुनतजतनुनिमनमोद॥मुखचूंबति
स्तनपानदेलालले बैगरतिगोद॥३॥ कुलह
सुरंगसिरताकताकीलाल रु गुलीपीतसुदेस
॥ कंठबघनांकरपहुंचीयालालसोभितसुंदर
वेस॥धा॥ तिलकुखुल्यो गोरोचनांलालघुंघरवा
रेकेस॥ नान्हीनान्हीदतियांदूधकीलालदेखि
यतहंसतसुदेस॥पा॥ काजरलोचनआंजिकैला

गोवि०
१६

ल मोहमतुकदेऊंवीग॥ अपनो लालकाहूंदेखन
न देऊं जिनकोउ लावऊंदीग॥ ६॥ प्रथम हनीतु
मपूतना लाल सकट भांजि तृणमारि॥ जमुला
अर्जुन तारिकें लाल अबकिनि छाद ऊंमारि॥ ७
॥ मेरे लालकी माइ ब्रजरानी बापगोपकुलराज
॥ धनि धनि तुहारे बलभद्र भैया करत सकल
सुखसाज॥ ८॥ मेरे आलकी गाइ अतिबाढीचर॥ १६

नहंदावनजांहि॥ पान्योपीवहिनदीजमुनाको
अंजनखरवेखांहि॥८॥ मेरेलालहोमेरेलाल
होकंसमारिगटलेऊमथुराफेरोव्रजराजउहा
ईगोपसखनिसुखदेऊ॥९॥ लियेंउगाइव्रज
राजगोदकरिदेउगारगरेलाइ॥ बजरिलीयें
जननीजबगोदकरिअस्तनचलेचुचाइ॥१॥
कहतेजसोदासुनिमेरेमोहें॥ लेकंकनियाचदा

।गोविं।

।१७।

३॥ ओसोवोपलनांऊखाऊंनातरूआंगनबेवि
खिलाऊं॥१२॥ ॥१॥ रागआसावरी॥ पटताल
॥ क्रीडतरंगराई॥ कुसुमितबनमध्यविविधिके
लि॥ बांधिफेटपटमल्लयुद्धकरेंरसरूदोऊभा
ई॥१॥ कहतबहसिआपुसमेंकोंनछुवेमोहिधा
ई॥ सोभैयाहोंतापरचढिहोंगोविंदप्रभुकीगाइ
निबेरनजाई॥२॥ ॥२॥ रागआसावरी॥ इक॥१॥

32

तालु॥ श्यामसुंदरबनखेलतसखनसंगविवि-
धिकेलि॥ कलिंदनंदिनीतटबांधिफेंटपटकर
तबहसिभुजजुपरस्परपेलि॥१॥ काहूकीमुरली
चोरतकाहूकोशृंगजेलिकाकाहूकोछीकोभांडो
काहूकीचोरतसेली॥ गोविंदप्रभुरसरंगभरेन्द
तप्रियसखाकेग्रीवाभुजमेली॥२॥ ॥३॥२॥
राग आसावरी॥ अथ ताल॥ निसिकेउनीदेबअतिछ

गोविं॥

९८ निरखि बिलागत भरे प्यारी संग॥ आलस चाछित
लोचन जुग भरि भरि आवत कुंज केलि सुधि
करि के प्रेम मत्त मंग॥१॥ सुभग उरसि पर बिनु
गुन मोती हार॥ कुंम कुमकुम रूषित तत पट तट कु
चउतंग॥ गोविंद प्रभु कर तउ रावत सबे कह
त तुल्हारे पंग अंग॥२॥ ॥ ६॥ राग आसावरी॥
जति ताल॥ नेकाचितै चलै री ललन सखी लेगए ॥९९॥

चित्तचोरि।। तब तें हार गडी चितवति प्रीन मकों 33
मुसकानी मुख मोरि।।२।। हों दधि मथन करति
ही भवन में उझकि कि चले ब्रजराज किसोर।। लटप
टी पाग केस बिलुलित सखी न जानूं कहां तें उ
ठि आए भोर।।२।। सब निसि जागे डगमगत धर
त पग खसि खसि परत पीत पट छोर।। गो विंद प्र
भु की सखी न जाति गति ऐसी बचतुर नागरी को।

गोविं
४९

रा॥३॥ ॥५॥ रागधनाश्री ॥ जतिताल ॥ कीडतम
नि मै अंगन रंग ॥ पीत ताफ ताको ऊगुलाबन्यो है
कुलह्यो लाल सुरंग ॥१॥ कटि किंकिनी घोष विस्मि
त अति धाइ चलत संग ॥ गोसुत पूछ भ्रमावत कर
गहि पंग राग सोहे अंग ॥२॥ गजमोती लर लटकन
सोहे सी बो लहरित रंग ॥ गोविंद प्रभु के अंग अंग प
र वारौं कोटि अनंग ॥३॥ ॥६॥ रागधनासरी ॥ इक ॥

ताल ३॥ बरजि बरजि सुत अपनो री बारो॥ सह्यो विगरगरह काज करहि क्यों चोरी चपल चलुर अति भारो॥ १॥ धर तउगइ दूध दधि भाजन जहां री सखी अति बडु अधियारो॥ कंरचरनकर धतबकुमनिगनजहांरी जाइ तहां अंगउजियारो॥ २॥ बैठे मानजुक छु नहीं जानत इहां बसू धे परभवन अकारो॥ बदनछिपाइ हंसी जननीत बगोविंद प्रभुबज

गोविं।

।२०। लोचनतारो॥३॥ ॥१॥रागधनासरी॥परताल॥
बदनसरोजऊपरमधुपावलीफिरिआईहो॥कुटि
लकेसबिचबिचचंपकलीअरुझाईहो॥नैयनक
पारंगरूरेसुंदरभुवमोहीहो॥मकरकुंडलप्रतिबिं
बतरूपामकपोलनिझाईहो॥१॥मनिकौस्तुभकं
गलसतहदेवनमालरुराईहो॥सुंदरसबअंगअं
गपरगोविंदबलिबलिजाईहो॥३॥ ॥३॥रागध॥२०॥

नासरी ॥ इकताल ॥ बने हैं सुभग आली विसाल लो-
चन ॥ घूंमत अरुन न तरुन मद माहे तेरी देखत जि-
नि मानिनी मान सोचन ॥ १ ॥ गोलक छवि मानों अ-
रुन कमल मांही मनौं जुगल अली परेस कोचन
॥ गोविंद प्रभु के जु सुभग लिलाट सोहे मोहन वि-
श्व तिलक गोरोचन ॥ २ ॥ ॥ ६ ॥ राग वसंत ॥ विहर-
त बन सरस बसंत श्याम ॥ संग जुवतिन जूथ गावे-

॥२१॥ लीलाअभिराम ॥१॥ ध्रु० ॥ मुकुलितनूतनघन
मान ॥ जाईजूही चंपकबकुलगुलाल ॥ पारिजा
तमंदारमाल ॥ लपटातमधुकरनिजाल ॥१॥ कु
टिलकदंबमुद्रेसताल ॥ देखिबनरीझेश्रीमोह
नलाल ॥ अतिकोमलनौतनप्रवाल ॥ कोकिल
कूजितअतिरसाल ॥३॥ ललितलवंगलतासु
वास ॥ केतकितरुनिमानोकरतिहास ॥ इहिंबि ॥२१॥

36

धिलासुकरेबिलास॥वारजेंजाइजनगोविंद

हास॥४॥ ॥१॥रागसारंग॥अबकेंफेरेलीजेहो

सुघररराइवहतांन॥मरसमधुरनीकीचोखपरी

हेतालबंधान॥१॥अवघरविकटसरसगिरिधर

तुमहीपेंआवेमोहिवुलारीत्रांन॥गोविंदप्रभुपि

यरसिकसिरोमनिमदनमोहनपियअतिसुजां

न॥२॥ ॥१॥रागसारंग॥एकताला॥ललनछाडो

।गोविं।।

।२२।। होबरियाई।। दानक्षापुनीलीजेललनुक्षहोवज
राजउहाई।।।।यहबकहाकहावेअंचलगहत
होऊकरतबोलीगेलीक्षरूमांडेसेतियेवकुराई
।।१।।जोकछुचाहेसोइदेऊंकानगहेंश्रोरलीजे।
आपुनोगांउंकोंनसहेतिहारीदिनदिनकीक्षधि
काई।। गोविंदप्रभुरसमत्तपरस्पररचितैबचली
मुसकाइलालनकोमनुचुराई।।२।। ।।१।।रागगा।।२३।।

सारंग॥ एकताल॥ महारांनु वृषभानकुमारी कृ
पाअवलोकनिदांनदे॥ तृषितलोचनचकोरमे
रेतुववदनइंदुकिरनिपांनदे॥१॥ सबबिधिभ्र
तिसुजांनसुंदरीसुनिहो बिनतीकांनदे॥ गोविंद
प्रभुचरनपरसिकहेंपियजाचकोंतुमानदे॥२॥
॥३॥ रागसारंग॥ जतिताल॥ ललनुबैठेकुंज
स्थली॥ कुसुमितबनपरेमलआमोदतहांकूजित

२३ कोकिलपुंजमत्तअली ॥ १ ॥ कुवलयदलकोमलसे
ज्यारची मृदुलसुहातबनीअधिकचंपककली ॥ गोविं
दप्रभुदंपति परस्परहै रसमत्तगली ॥ ३ ॥ ७ ॥ रा
गसारंग ॥ मोहनसिरघालीहोगगोरी ॥ सुंदरमुख
जौलोंनहिदेखियतभईरहतनौलोंबौरी ॥ १ ॥ वदन
सुखकमलपरागचाखिमेरेनैननमधुपलाईडोरी
॥ गोविंदप्रभुबनतेंकबआइहैरहतुहृदकैसेंतोरी २३

॥१॥ ॥५॥ रागसारंग ॥ यमुनाधाटरोकीहोरसिक
वंशावलि॥ हसिमुसिकाइकहतव्रजसुंदरिछबी
लेछेलछांडोअंचलि॥१॥ रोननिवेरिलेऊव्रजसुं
दरिछांडोझटपटीकतगहतश्मलकावलि॥ कर
सोंकरजुगहिहटेसोंलगाइलईगोविंदप्रभुसोंतो
रासरंगमिलि॥१॥ ॥६॥ रागसारंग ॥ पगताल ॥
आजुकीबानिकहीनजाई॥ वेगेनिकसिकुंजद्वार

॥गोविं॥

॥२४॥

लटपटीपागसिथिलअलकावलिसखीतवरुह
चंदरसभरेब्रजराजकुंमार॥१॥श्रमजलबिंदुक
पोलबिराजतमनक्रंओसकननीलकमलप
र॥गोविंदप्रभुलाडिलेलछनबलिबकहाक
हेंअंगअंगसुंदरबर॥२॥७॥रागसारंग॥ब
लिबलिश्राजुकीबानिकलाल॥कसूंभीपागपीत
कुलहभरितकुसुमगुलाल॥१॥बिम्बमोहननव

॥२४॥

केसरितिलकभाल॥ सुंदरमुखकमलहिंलपटा
तमधुब्रतजाल॥३॥ वस्त्रणीपीतबिध्रुरितछूटे
वेरसुभतुरबिसाल॥ गोविंदप्रभुपियपरसित
नखतरनितुलसीमाल॥४॥ ६॥ रागसारंग॥
इकताला॥ सकलकलाप्रवीनरीरी इहांवृंदावनरं
ग॥ सरिगमपधनिक्रलापकरतिरसउपजतता
नतरंग॥ १॥ तततजतिगतिलेतसुगतकुटधिकट

॥गोविं॰॥
॥२५॥

धितांगधावाजतमृदंग॥गोविंदप्रभुकेजूसंगस्सं
गपरवारतकोटिअनंग॥१॥ ॥५१॥रागसारंग॥झप
ताल॥नेनाबगगिलएमेरे॥आवतिजुतीचलीमा
रगमेंसोनेकुललुनमुखहेरे॥१॥मनबुधिचित
फेरनकोंमेपचएदेखिरूपलुभानेएऊमएरीजाइ
चेरे॥अबकहाकरोंमतोदेवसखीरीयहहवालहै
गोविंदप्रभुकेरे॥१॥ ॥५०॥रागसारंग॥झपताल॥१॥

चितैमुसिकानीहोवृखभानकुमारी॥ खसतमुर
लीकरनंदनंदनकेंलीयोहेलालमनुहारी॥१॥ ग
जगतिचालचलतिब्रजसुंदरी। लटकतव्यामरसम
लपियारी॥ कटिकिंकिनीहाररतरतिताटंकेंझलक
घूंघरवारी॥२॥ हेरविविवसभएमदनमोहनपिय
चंपकतनबनीनीलसारी॥ झांकोभरिमिलिनव
लगिरिधरकोगोविंदजनबलिहारी॥३॥ ॥११॥रा

।गोविं।।

।।२६।। ।।सारंग।। कुंवर बैठे प्यारी के संग ।। अंग अंग भरे रंग बलि बलि बलि त्रिभंग ।। जुवतिन सुखदाई ।। ।।१।। ललित गति बिलास हंस पति मन हास तिज मास विगलित कच कुसुम बास स्फुटित कुसुम निकर तैसी ए सरद रैन जुन्हाई ।।१।। नव निकुंज मधुप गुंज कोकिल कल कूजित कुंज सीतल मंद सुगंध पवन सुखदाई ।। गोविंद प्रभु सरस जोरी निरख वि म ।।२६।।

रनफोजमोरीछैलछबीलेनवलकुंवरव्रजरा
जकुलमनिराई॥३॥ ॥९२॥ रागसारंग॥ यतिन
न॥ सुंदरताकीहद॥ कुंडलललोलकपोलबिराजे
नवलगितभुवजुतरुणमद॥१॥ विद्रुमअधरस
दनदाडौंद्युतिडलरीकंगमनिहारबिसद॥ गोविं
दव्रजभुवनतेंव्रजआवतमदगजचालधरतपद
॥२॥ ॥९३॥ रागसारंग॥ पियजुकरतमनुहारि

गोविं०

॥२७॥ समुझि देखि जियप्यारी॥ कुंजके द्वारक बैठेगट हे
री मनमोहन ललनां खरी निठुर वृखभांनकुमारी
॥१॥ अलक सवांर तु के मिसु भामिनी फेरत पिय
तन री नेंन नि तारी॥ गोविंद प्रभु रूप देखि पिया
को मुख भयो तन दहि सो भरत अंक वारी॥२॥
॥२८॥ राग सारंग॥ इकताल॥ नैंनन लागी हो च
टपटी॥ मदनमोहन पिय निकसे द्वारके सोहत पा ॥७॥

गलटपटी ॥ ३ ॥ हरिजाइ फिरि चितयौरी मोतननें
नकमलमनहरनम्हकुठी ॥ गोविंदप्रभुपियचल
तललितगतिकछुसखाअपनीगढी ॥ ४ ॥ १५ ॥
रागसारंग ॥ नेनोंरी लड़िकांतसे ॥ आलसअरुण
अतिरगमगेआंकिंपानिआंनिमुसकातसे ॥ १ ॥
कछुइकनिरूपमरूपपांनकियेंजाननहीकौआ
कुलातसे ॥ गोविंदबलिसरवीकहेमेरीदृष्टिलागि

।।गोविं।।

।।२८।। घूंघट मे है खियत हैं जं भात से ।।३।। ।।२८।। रागसारं

ग।।पटताल।। अहीतें टोटाम न हरत आगें आगें

कहा करजुगे ।। नेकु बडे से किनि होऊ बलि जांउ

त्रिभुवन युवतिनि को चितु चोरजुगे ।।१।। देखत

के जेनेन्हे से उर मे सातों दीप खंड जसु रानी सोई

सांची पे करजुगे ।। गोविंद प्रभु के जुनेंन बेंन रति

सूचत देखो री माई मेरे जान मन मथ सो लरजुगे ।।२८

॥ रि॥ २ ॥ राग सारंग ॥ एकताल ॥ तुमपैंडो ईसे
केंरहत कैसे कैं आंवहि जां हि वृजव धू तुमं हि वि
चारि देखो परम सुजांन ॥ खरिक उहावन दिन
दिन चाहे एसें कैसें बनें गुसांई इत उत गग हरु गे
लौ नहीं आंन ॥ १ ॥ एसी अटपटी करत देखत हो
लाड कुंवर नंद जब परिहे कबहूं वृजराज के कांन
गोविंद प्रभु सो कहत प्यारी की सखी तुमनें कु जो

गोविं।

२९ ॥ इतसरकोहमें देऊधोंजांन॥२॥ ॥१९॥ रागसा

रंग॥ जतिताल॥ जाहितनमनधनदीजेम्नू

तासोंऊसालीसूसेकैसेबनिऊावै॥ घोषनृपसु

तएतेमेंराजकुमारतातेंकहतिहोंरीसमुझि

चितऊनखनिकैसेंपियपावै॥१॥ नवलनिकुं

जनवलबैठेतातेंहोपगईएसेसमयोतोहासी

बडभागनिपावै॥ सोईतोविचित्रगुनरूपत्रिया २९

जोईगोविंदप्रभुकोंरिझावै॥ रि॥ ८९॥ रागसा
रंग॥ पटताल॥ होंनीकेंजांनतीरी आलीतेरे
हदेकीबात॥ सकलघोषजुवतिनकोसर्वसु
हस्योतेंहीरी आलीसांवलगात॥ रि॥ जाकोकार
जसिधकरतविधाताताहिकहाकाहूकीपरवा
हरीमाईकहिरहोकोऊवनाइपांचसात॥ गोविं
दप्रभुनिधनिधनपायोतिनहिंछपायोमोतेंकु

॥ गो० वि० ॥

॥ ३० ॥ नडुरतहेरीजो तूंडारडारतोहोपातपात ॥ २० ॥

॥ २१ ॥ रागसारंग ॥ इकताला ॥ हमारे गोकु
लके वेरूखव्रज ॥ वेदेखियत्तहे प्राचीदिसतेंनेक
हीदछिनहेमेरी अंगुरीके अग्र करोनेकु मूख
व्र ॥ १ ॥ गोवर्द्धनश्रंग चढि बकहे देखिवेकीभू
खव्रज ॥ जनमभूमि चलिआएहें गोविंदप्रभुतन
नकुलकितमनभयो हेसपतिसुखव्रज ॥ २ ॥ ॥ २१ ॥ ३०

॥ राग सारंग ॥ व्रजजनलोचनहीकोतारो ॥ सु
मिजसुमतितिनेरोपूतसपूतहेकुलदीपकउजि
यारो ॥१॥ धेनुचरावनजातदूरिजबहोतुभव
नअतिभारो ॥ घोषसुजीवनिमूरिहमारीछि
नुमतिउतइतटारो ॥२॥ सातघोसगिरिराजध
र्योकरसातवरसकोबारो ॥ गोविंदप्रभुचिर
जीयोरांनीतेरोसुत गोपबंसरखवारो ॥३॥ २२

॥ गो॰ वि॰ ॥

॥३१॥ रागसारंग॥ जतिताल॥ तेंकछुघालीरी गोरी एपि

यापरसीप्यारी॥ निसदिन तो हिजपत प्रानपति ए

तेरी सोंलालनगिरिधारी॥१॥ सुधिवेगि ल्यावें तु

अस्वरूपकी सुधिनकछूतनरी विहारी॥ रसना

रतटतुववनामराधेराधेजूगोविंदप्रभुदृष्टसों

भरतअंवारी॥२॥ ॥२३॥ रागसारंग॥ रूपताल॥

श्रीवल्लभनंदनरूपअनूपस्वरूपकह्योनहीजाई॥ ॥३१॥

प्रगटपरमानंदगोकुलबसतुहेसबजगतकेसुष
खदाई ॥२॥ भक्तिमुक्तिदेतसबकोंनिजजनकों
कृपाप्रेमछिनुछिनुआनंदकंदबरखतअधि
काई ॥ सुखमयसुखरूपसुखदएकरसनांक
हांलोंबरनोंगोविंदबलिजाई ॥३॥ ॥२५॥ राग
सारंग ॥ इकताला ॥ एसीप्रीतिकहूंनहीदेखीज
सुमतिसुतश्रीवल्लभसुतजैसीसेसबहसुख

गोवि॰ ॥
३२॥ जातनलेखी ॥ १॥ आज्ञामांगिचलतगोकुलकों ।
छिनुछिनुझांखिऊरोखनपेखी ॥ सुनियतकथा
जलदचात्रिककीकुमुदिनिचंदचकोरबिसेखी
॥ २॥ इनकोकीयोसबैजियभावतकरतसिंगार
विचित्रविसेखी ॥ गोविंदगोवर्द्धनपेमागतवि ।
छरुरूपलजिनश्रंधानिमेखी ॥ ३॥ ॥ २५॥ राग ।
सारंग ॥ चितवतरहतसदागोकुलतन ॥ बारबार ३२

खिरकीह्वैऊंकतक्षति आतुरपुलकिततन ॥१९॥

नरमसखासुखसंगहीचाहतभरतकमलद

ललोचन ॥ तिहिंसमेंमिलिगोविंदप्रभुकुंवर

बिरहदुखमोचन ॥२०॥ ॥२६॥ रागसारंग ॥ अ

तिताल ॥ कहाभयोसुखमोरेंकछुकाहूजूकह्यौ

॥ रसिकसुजानलाडिलोबललननामेराअंखिय.

नमेंजुरह्यौ ॥१॥ अबकछुबातफेरिपरीजूओरे

गो॰ वि॰ ॥

॥ ३३ ॥ रे प्रेम जाव नदी यो भयो हे हृद्य तें दस्यौ ॥ त्रिलोकी
भूति सुज्ञां नरी सर्व सुहस्यो गोविंद प्रभु जुलस्यो
॥ ३॥ ॥ २७ ॥ राग सारंग ॥ अगताल ॥ गोवर्द्धन गिरि
श्टंग सिलनि पर बैठे व छाक खात दधि ओदन ॥ आ
स पास ब्रुज सखा मंडली मधि हे बलि मोदन बैठे
खात खवावत प्रेम प्रमोदन ॥ काहू को छी को नोइ
चो रिग हिंडार तव हवा पर वह वा को हो कोदन ॥ ३४ ॥

48

विविधिकेलिक्रीडतगोविंदप्रभुहंसिगिरिज्ञात
सुबलकीहोगोदन॥१॥ ॥४॥ राग सारंग॥इ
कताल॥ बैठेलालगोवर्द्धनगिरिगोद॥ मंडलस
खासंगबलमोहनखातखवावतप्रेमप्रमोद॥१॥
भईअबारभूख◆हीलागीतबचितयेघरकीको
द॥ गोविंदतबहीछांकलेआयोपरईमातजसोद
॥२॥ ॥४॥ राग सारंग॥ पठताल॥ जामेजेतोगुल

गोविं॥

३४॥ हेरीलालनसबजांनतहैं ॥ सकलगुननिधानजां-
नताकीजतैसीयेमांनतहैं ॥१॥ उनकेआगेबड़-
नवीअधिकाईभूलिकोऊबखानतहैं ॥ गोविंद
प्रभुसकलकलाप्रबीनबातेंबकुतडफांनतहैं-
॥२॥ ॥३०॥ रागसारंग॥जतिताल॥ गुजरियाअ-
बरीबड़बेरनिकेगईदांनुमारि ॥ आजुगहिनपा
ईनंदजूकीसोंहलैहोंसबदिनदिनहींनिवारि ॥१॥ ३४

49

ओकबहू आई इहिं मारग सपतली जियेखलानं
गस तुं कियेमेरे संगकी हे जु आगें जातिग्वा रि। स
बसारिवय निमेंतें गहिरा रखिगो विं दप्रभु मनम
नाइ रने अप नों जानुदी जे एना रि॥४१॥ ॥३१॥राग
सारंग॥ पटताल॥ स्याम सुंदर रहसि बूझत हैं कहि
धौरी मो तन याह धिकी ग्वाल नि॥ बेचेगी तौ गदार
हे देखो धौंकै सौं जम्यों ओर का हे कों चलीयेजाति

॥गोविं०॥
॥३५॥ नैन बिसाल ॥१॥ व्रखभाननंदिनी को मोरछ्य मम
ही रातुम पै दीयो न जात हे हसि हसि कहति चल
ति गज चालनि ॥ गोविंदप्रभु पियप्यारी नेऊ जो
न्यो तब मिस कै गंनी सेना बेंनी करति वे आजनि
॥२॥ ॥३६॥ राग सारंग ॥ जतिताल ॥ अबहों पा
ढो रासों दारी ॥ गोरस लेत अटक जब कीनी सुत
बहो देत फिरि गारी ॥१॥ निसुदिन घर घर फेरो ३५

50

करे बालक जूथ मझारी ॥ गोबिंद बलि इम कहत ग्वालिनी ए बातें कैसें के जाति सहारी ॥ २ ॥ ३३ ॥

॥ राग सारंग ॥ बकुंत रही समुझाइ मनायो मांन तन हीं गोपाल ॥ आपुन हीं चलि ये मनमोहन गिरिधर गज गति चाल ॥ १ ॥ प्रीतकी रीति रंगीलो जांने मोचत मांन मोंन धरि नंद लाल ॥ गोविंद प्रभु हो कबचन कहत हे हेरु छांड़े व्रजलाल ॥ २ ॥

गो॰वि॰॥
॥३६॥

॥३ध॥ रागनट॥पदताल॥ मोहननैननितेंनहीं
टरत॥ बिनुदेखेंतलबेलीलागतदेखतमनजुह
रत॥१॥ आसनअसनबसनकीसुधिआवेब
कछुनकरत॥ गोविंदबलिइमकहतिप्यारीतूं
सिखदेरीसखीकैसेंकेआवेभरत॥२॥४१॥राग
नट॥ कोनप्रकृतितुम्हारीललनांजोदेखेसोकहा
कहेगटेइतउतकों॥ सेकलब्रजकेबगरोमहगाइ॥३६॥

51

नकेडगरेंघेरिघेरिरारवीहमकहाधरावतकसा

रोइहन्याउकितको॥श्री॥ दांनदांनकरिरारवोज

गेंहीगालमारतकोनेदीयाकोनेंलीयोएसेंकेसं

भरिबोरीमाईइनसोंनितनितको॥चलोरीउल

टिभुवनदांनकेमिसिलूटतहोकहेंजाइनंदजूसें

पायोमतोगोविंदप्रभुचितको॥श्री॥श्रीरामानंद

॥जतिताल॥मींगमींगबतियनिउनननमनुहारि

गोविं॰

३७ करन आए ॥ कहा कहौ ये तुम्हारी सुदृढ़ई श्यामसुंदर ते सेई सुंदर मन ताते ब्रज युवतिन मन भाए ॥ १ ॥ कत सकुचत पिय खरे इनी के लागत हो प्रन प्यारी के संग छाए ॥ धनि धनि ते ई त्रिया सुभग जिनि पूरब सुकृत किये ताते गोविंद प्रभु पिय पाए ॥ २ ॥ ३ ॥ राग नट ॥ लालन बहुत मनुहारि करी ॥ हो तो तेरो रूप देखें रही री वा सचु पुजो कछु ३७

कहिजे त्यों त्यों बमौन धरी ॥१॥ मदन मोहन बेगे
मंजुल कुंज मंडप तु व मिलन आतुर घरी घरी
पलु पलु जात जुबरी ॥ गोविंद प्रभु तो सों सदाई
प्राणित हे री कोन टेव प्यारी तेरी सों। तें निठुराई प
करी ॥२॥ ॥६॥ राग नट ॥ पद ताल ॥ प्रीतम प्री
ति ही तें पैये ॥ जद्यपि रूप गुन सील सुघरता तें इ
न बातन निन रिझैये ॥१॥ सत कुल जनम करम सु

गोविं॰
३९ वानश्रुतिसुमृतिपुरानपढैये॥ गोविंदकहे बिनु
सनेहसुआलोरसनाकहानचैये॥ २॥ ४॥ राग
नट॥ इकताल॥ हसतहसतलालनआएरी
मेरेआंगन॥ होतोदेषभेरवगगिरहीमेरीआ
लीकछुनकहिआवैछबिमंगनां॥ १॥ जियकी
रिसमईप्रसत्नअधिकरुचिबाढीमोहनमोही
रीमनभयोलगनां॥ करसोंकरकगहिहदेमी॥ ३९

लगावत गोविंदप्रभुकेसेंबरनोंसबनिसिसु
खजगनो॥१॥ ॥६॥रागनट॥कहोजूदांनलेहो
कैसे॥ दधिदूधगोरसकोदांनुकबहूंनसुन्यो
कोनमानोंलोंगलाहीकाहुजैसें॥२॥आपुतिले ही
तकाहुबलिखिदीनोंसमुझावऊधोंतैसे॥गोवि
दप्रभुतुह्मेडरूनकाहुकोब्रजराजकुवरताते
गालमारतघरबैसें॥२॥ ॥७॥रागनट॥अगता

॥गोवि॥
॥कृ॥ ला॥ तेरी मोहनको मन हरि लीयो॥ नेकु चितै करि
चपल नैंननि नाजानों कहा कीयो ॥१॥ बैठेकुं
जके द्वार तुव पथ जोवत भरि भरि लेत हीयो गो
विंद प्रभुको प्रेम कहांलों बरनों री तो बिनु जाइ
नजीयो॥२॥ ॥८॥ राग नट॥ पद लाल॥ जो पैश्री
विठ्ठल रूप न धरते॥ तो कैसें व घोर कलियुग के
महा पतितन निस्तरते॥१॥ सेवा रीति प्रीति व्रजजन ॥३॥

54

कोश्रीमुखतेविसरते॥श्रीविठ्ठलनोमऋमृत
जिनिलीनोरसनासरससुफलते॥२॥कीरति
विसदसुनीजिनिश्रवाननिविश्वविषयपरिह
रते॥गोविंदबलिहरमनजिनिपायोसोउम
गिउमगिरसभरते॥३॥५॥रागनट॥अता
ला॥कहोमेरेबारेहोलालगोवर्द्धनकेसेंगरक
रलीनो॥एकहीहाथक्षपकेलेंहीटोटामोंदेखोने

गोविं॰
ध०

कुवलयकनहीदीनो ॥१॥ सुंदरकर चांपतिचूंम
तिकूंकतिउरलावतिःपंचराषेमजलभीनो ॥ गो॰
विंदप्रभुसपूतलरिकालरिकाईतेंबुजजनमनु
सुखदीनो ॥२॥ १० ॥ रागनट ॥ पटताल ॥ नृ
चालिबोलीरीनंदकुमार ॥ गोविंनुरहितसकत
जमुनांपुलिननवनिकुंजनिमेतेरेकारनपह
वतलपरचत ॥१॥ बिकसितबनराजतहींमन्न॰

मंदसीतलसुगंधमंद वायुबहत ॥ सुनिसखी
वांसीकलश्रवनसमुझितेरोईनांउरटत ॥२॥
कुरबकमरुबकुलबेलिसघनचंपककुसुम-
हाररचत ॥ गोविंदप्रभुकेतकंठलागिश्यामजल
ददामिनीज्यमविलसत ॥३॥ ॥११॥ रागनट ॥ इ
कताल ॥ माईरीआजुमनमोहनपियगढेसिंघ
द्वारमोहतब्रजजनमन ॥ तेसीएमोहनसिरपाग-

गोविं
६१

बनी तैसी एकुलह तैसी बनी मालबन ॥१॥ तैसी एकं
कमनी तैसा रई मोतिनु हार तैसी ए पातबरनी खुली
रूपामतन ॥ गोविंदप्रभुके जअंग अंगपरवारिफे
रिडारों कोटिकोटिमदन ॥२॥ ॥ १२ ॥ रागनट ॥
प्यारीराधातेरेरीगावतकोकिलागनरहेमौनध
रि ॥ कहतमदनमोहनकोलियोमनुहरि ॥१॥ कुंज
महलमेंमोहनमधुरतानराखेवितानतरि ॥ गोविंद ६१

56

धुरी रिझि हरे लगाई ब्रखभांनकुंवरि ॥१॥ ॥३॥

राग नट ॥ चउताल ॥ मोहन मोहनी घाली सिर पर ॥ ओही मोही रहति सदाई ॥ निसि दिनु सखी री बजो लोंन देखति पिय ब्रजराज कुंवर ॥१॥ जर पिधी रज धरि रहति सखी तदपि मुरली धुनि सुन त थाा न हर ॥ अब रह्यो न परे मिलों गीरा गोविंद प्रभु रसिक कुंवर बलि बलि श्याम सुंदर ॥२॥ ॥४॥

॥गो०वि०॥

॥ ईमन ॥ राग नट ॥ मंदे मेंबके मे होप्यारे लाल नमानि मानन तजति ॥ केतीबार तुम हो पर ई जूम नेक जतन करि मैं समुझाई उन्हे सपने जियजु कोटि कबात सजति ॥ २ ॥ इतनी हरि कुंज कुंज की ओर ह्वै आपु नहीं चलि ये तुम जो जी ती चाहत राति पति ॥ गोविंद प्रभु आए प्यारी के निकट हुती के पाछे पाछे सो संचल ओट ह्वै कछु नेंन निमुसक ॥ ६२

ति॥२॥ ॥१५॥ राग नट॥ लालन नाहिं नेंकाहू

केबसके॥ बावरी भई री त्रियजन सों मनु अरुला

वैवे तो हेस हाई अपने रसके॥२॥ निरखि परस्त

रे रवि जियको भरमगयो कामिनी बधुन को मन

न कसे के॥ तहपि कछु मोहनी गोविंद प्रभु पेंजुव

ती सभा मेंबदित जसके॥२॥ ॥१६॥ राग नट

॥ बिनु देखें मोहन कछु न सुहाइ सखी कहा री क

गोविं॰ ध३

रीमनक्षस्तजिरह्योतबतेंइननेननिबदनमाधुरी
चली॥१॥ तनसुधिबुधिनरही॰आलीदिनरेनि॰
गजदृपिसकलघोरवसखी॥गोविंदप्रभुकोंमेसर
बसुदानोजियकीकहततोसोंकेकुकछुकरऊ॰
सखी॥२॥ ॥१७॥रागनट॥ अंगअंगमोहनमो॰
हनपागमोहनकुलहीसुरंगमोहन॥अलकबि
चबिचचंपककलीछबिपोहन॥१॥मोहनलिला॥ ध३

रतिलकमोहनऽधरमोहनकपोलऽवतंससमोहन
॥ मनिकंगभाजेउरमोतिनमालविराजे॥ गोविं
दबलिबलिजाईकोटिमदनटकटकजोहन॥२॥
॥ ॥२०॥ रागनट॥ अगताल॥ कैसेबललनमन
मांने॥ झूठीमीठीबतियांकहतमुरवधूर्तविधीक
रनऽआएहोहमसों॥ तुमतेंहंमनहोंहिंत्रियाहेंच
लोऽपानें॥ १॥ तेसेईतोसांवलवरनतेसेईसांवलम

गोविं॰ ॥ ६६ ॥

नजियकीराखेंरहतमुंहकीहमसोंबाने ॥ गोविं॰
दप्रभुपियविकटनटनायकभईबडीबारपांउ
धारियेनीकेजाने ॥ २ ॥ ११९ ॥ रागनट ॥ आजु
बनिठनिलालअनुआएरीतेरेंमानुकरिन्योछाव
रि ॥ यद्यपिबहुनाइककहंमनअटक्योतेरेगु
नरूपमोहेतातेंतोसोंहेराभांवरि ॥ १ ॥ एसेरीला
लनपरतनमनधनवारीजेसमुझिसयानीछिनुछि ॥ ६६ ॥

नुघटतिजावरि॥हती केवचनसुनिप्रेमव्याकु
लभईमिलेरीगोविंदप्रभुराखीबांधिसुहाग
संवरि॥२११॥ ॥२५॥रागनट॥ऊपताल॥आजु
बनेब्रजराजकुंवरवैगेसिंघद्वारनिकसिसंग
संगनवनवछबिबरनीनजाई॥अलक
तिलकनासिकाजुकपोललोलकुंडलछबिरे
खतदंतकोटिकरविंअधरअरुनदसनति

गोवि०

६५

मोंफांई॥१॥लटपटेसिरपेंचपागपीतकुलहभ
रीगुलालछूटकतसिरसेंहरोवनीसोभाऽधि
काई॥गोविंदप्रभुकीबानिकदेखतविथकित
व्रजजनमनरूपरासिगिरिवरधरसुंदरमु
निराई॥२॥ ॥१॥रागनट॥बरजतक्योंनहीं
अपनीमुरलीकोंहमारीसखीनकोंसरबसुचुरा
वत॥अवनद्वारह्वैपेगतचितभंडारखोलेंआरजप ६५

थनिडरबधीरज धनलैंआवत॥१॥रोमपुलकि
जागेअसुबाधुकारनलागेतिनहूंनपाएनीकेंग
हिआवत॥गोविंदप्रभुभलोजुभलोन्याउदेखी
एतेपरहीअधरमधुपावत॥२॥ रा॥२॥गौरी
गनट॥हंमनभईबडभागिनबसुरी॥करकेंबु
जमेंरहतसदांईछिनछिनअतिपावतअधरमधु
रसमरी॥१॥मुरलीमनोहरनांवयाहीतेंऔरएसो

६६ कों न कोविदत जगजसरी ॥ गोविंद बलिहंमकह
त पियारी या ही तें विधाता ली यो हमारो सरबा
सुरी ॥ २ ॥ ८२ ॥ ॥ रागपूरवी ॥ पगताल ॥ सो
हत लाल न सिर पाग सां करे पेच नि चोरी ॥ सुं
दर कुसुम सुकेस नि बिच रारवी गूंथित कुं हरी क
॥ १ ॥ सुरत सिथिल अभिमित भाति लोचन नंदमत
रूवर समभरी ॥ गोविंद प्रभु प्यारी संग बैठे ज हां ॥ ६६

निबिडकुंजगरी ॥२॥ ॥१॥ रागपूर्वी ॥ मोहनक
नककुसुमकरनं अतमोहतमोतिनअवतंस
लटकतमनमथनहरन ॥१॥ लालपागआधे
सिरकुलहचंपकभरन ॥ गोविंदप्रभुसिंघद्वार
गटेसुप्रियसखाभुजअंसधरन ॥२॥ ॥२॥
रागपूरबी ॥ जतिताल ॥ चलेजाऊटोटाअपने
मघरकततरोकब्रजवधूबाट ॥ कहाकहतहोसो

॥गोविं॥

॥६७॥ ईकहोहरिभएमातिपरसऊगोरसकेमाट॥१॥ दिन दिनकौपेंडोरीमाईहमकेसेंऔंवहिंजांहिइनसें परीआंट॥गोविंदप्रभुतुमेंयहनवूझियेव्रजराइ कुंवरजाइचरावऊगोधनकेगट॥२॥ ॥३॥रा गसूवी॥गेयांगईहरिटेरोजुकान्ह॥ जोऊंचेचढि टेरसुनावऊबगरहेगीमेरेजांन॥१॥ वृंदाबनमेरहे तृनचरतचितगईचोकीटेरपरतकांन॥ दधधा॥६७॥

रधरनीसींचतआईगोविंदप्रभुजहांकरनकमल
मधुपान॥२॥ ॥छ॥रागपूर्वी॥ गोधनपाछें
आवतनटवरकाछें॥ छुरितगोरजअलककी
छबिमोपेवरनीनजाइकनककुंडललोलसोच
नमोहनबेनुबजावत॥१॥ प्रियसखाभुजअंस
धरेंनीलकमलदृछिनकरमधुबतसुरदेतसंग
मंदमधुरगावत॥ गोविंदप्रभुबदनचंदयुवती

गोविं०

५७ मननैनचकोररूपसुधापांनकरतसोकाहेना
जियभावे॥१॥ ॥५॥ रागपूर्वी॥ आजुबनेरीला
लनगिरिवरधारी॥ याबानिकपरबलिबलिजां
उ॥ चंपकभरीकुलहलटकतकसुंभीपागछबि
भारी॥१॥ वसनपीतउपामअंकपरसोहतसर
गजामोझेहेतमनमथमनहारी॥ गोविंदप्रभु
रीझिवुझभांननंदिनीकंचुकीछोरिभरतअंक ५७

63

बारी॥२॥ ॥६॥ राग गौडी॥ जतिताल॥ कन
ककुंडलमंडितकपोल अतिगोर अलुरित सुके
स॥ मद्गज चालचलत सुरभी संग लाडिले गोप
लव्रजेस॥१॥ नैन चकोरकी ये ब्रुजवासी पीवत
बदनराकेस॥ अतिप्रफुलित मुखकमल सब
निके गोपकुलनलिनदिनेस॥ अतिमद्तरुन
विघूर्णितलोचन अतिविकसित रसरूपावेस॥

गोविं॰ ॥
५८

चितवतचलतमाधुरीवरखतगोविंदप्रभुव्रजह
रपवेस॥३॥ ॥१॥ रागगौंड॥ आजुबनेरीलाल
नुगिरिधारी॥ बानिकपरबलिबलिजाऊं॥ चंप
कभरीकुलहसिरलटकतकसुंभीपागछबिभा
री॥१॥ बरनीपीतवपामसअंगपरअरुणपगरेजा
मोजेंमनमथमनुहारी॥ गोविंदप्रभुरीझिवरवभां
ननेंदिनीकंचुकीछोरिभरतअंकवारी॥२॥ ॥१॥ ॥६९॥

64

॥ राग गौरी ॥ अग्टतकटक धुम धुम धुम धुं धुं
धुं धुं द्रमनन्नन्नंतरसिकवरआवतगोधनसंग
॥ लालकाछकटिकिंकिनीपगनूपुररुनुरुनु
पीतपटिपारोसिरसवरोईसुरंग॥१॥उरपरूपचंद्र(ति)
वाजिमुरलीमृदंगतालसंगमुदितगोपबालगा
वततांनतरंग॥ ब्रजजनसवहाररिविनिरखिजेजे
कहेकुसुमवरखतगोविंदप्रभुपरवारोकोटिअनं

॥ गोविं० ॥

॥ ४९ ॥ २ ॥ ७३ ॥ राग गौडी ॥ चरताल ॥ अहिहृनकी

जियेरी प्यारी ॥ बोलत बलि गिरिधरलाल कुंजवि

हारी ॥ परत सुंदर सुकुमार कब केजागत निसि

सुनिरी आली कल समान तेरो हिरदो भारी ॥

॥ १ ॥ उनके जीयमें तूंही सरवारा तेरे हृदेकी कछुरा

मोपें जाइन विचारी ॥ अब एते पर गोविंदप्रभु सौं

मनमुख मनाइहें मेरे तो चरन रसनाहारी ॥ २ ॥ ॥ ४९ ॥

॥ ४ ॥ रागगोरी ॥ जतिताल ॥ इहां देखि ये सकल ब्रज
राज ॥ चढि गिरिश्रृंग कहत मनमोहन ॥ धाव
त सप तु महीं ब्रजराज की नेक इहां लौ चढि आउ
॥ १ ॥ अंखी पंखी काहु स्तुरु भै मा हो कनक कलस प
रघु जा फहरा ति बताउ ॥ गोविंद प्रभु सौं कहत मस
खा एसो तु महीं दिखाऊं ॥ २ ॥ ॥ ५ ॥ रागगोरी ॥ च
ठताल ॥ उठि चलि मान तजि बावरी ॥ रसिककुंवर

॥गोविं॰

॥ ५० ॥ मोहि बकरत हेरी नाजानियेकहा तो परहे भावरी

॥ १ ॥ प्रियबकु नायकतिन सों इतनी कीजै इतेपर

लालमनपरी हे आंवरी ॥ गोविंदप्रभुकेतंकं गला

गिधौंरीबमेरोकह्यो सुनिरा खिबांधिसुहागदांव

री ॥ २ ॥ ॥ ६ ॥ रागगौरी ॥ आजुबतेनीकें करिमें

जाविदेखिप्यारीअतिहहुभारी ॥ मदनमोहनपि

यहोंपरईरी औरबकुन करतिमनुहारी ॥ १ ॥ तुमहि ॥ ५० ॥

66

तसोंकरग्रथतचोलीराबिचबिचजाईजूहीचंप-
कनिवारी॥गोविंदप्रभुसुहागबसकीनेंराउठि
चलिबेगिमिलिकुंजबिहारी॥२॥ ॥७॥रागगौ
रा॥ बनतेंबनेमाईआवतव्रजनाथ॥गोवतगो-
रीरागवहुतवबालकसाथ॥१॥कसुंभीपागसि
रकुलहचंपकभरीसेहरेतैंकहूंकहूंकुसुमम्ब्ल-
थ॥बजावतपत्रमृंगकोलाहलआवतघोखपथ

गोविं
॥५१॥ ॥२॥ प्रियसखा अंसभुजा लीला धरें रतनखचित
मुरलीसोहे हाथ॥ गोविंदप्रभुके मुखारविंदपरवा
रोंकोटिमनमथ॥३॥ ॥८॥ रागगौरी॥ तबतें म
दनरूपठगोरीपरी॥ जबतें दृष्टिपरे मोहनजूरह
तसदासंगहीतबतें भेखमधुबतधारी॥१॥ क
मलबदनकबहूंनतजिसकत अतिसुगंधचलि
छबितरंगरी॥ विकसितरहतसदागोविंदकहे ॥५१

सुरभीरेनुरंजितपरागभरी ॥२॥ ॥८॥ रागगौरी

॥ जसुमतिउदरउदधिआनंदकरिब्रजवकुल-
कुमुदविकासीहो ॥ रूपकिरनबरखतनिजज-
नकोंविनेनचकोरसुधासीहो ॥१॥ राकाराधा-
पतिपरिपूरनषोडसकलागुनरासीहो ॥ बाल-
कहूंदछ्वमोंनऊंवृदावनव्योमविलासीहो ॥२॥
॥ दिवसबिरहरवितापनसावतदेखतमनऊ-

गोविं ५२

लासी हो॥ हरततिमरसबघोरवमंडलकें गोविं

दहदेजोंनएकासीहो॥३॥ ॥१०॥ रागगोरी

॥ जतिताल॥ हमहिंव्रजलाडिसोंकाज॥ ज

सुजसपजसुकोहमहिंडरनांहीकेहूनोंक

हेआज॥१॥ जोकाहूकृपाकरीजसजोसन

मुखहेव्रजनृपजुवराज॥ गोविंदप्रभुकीकृ

पाचाहियेजोहेघोरवसिरताज॥२॥ ॥११॥ ५२

।।रागगौरी।। सुथैयां बेगे हैं जु बराजु ।। मागध-
सुतपरोहित बडडे गोप समाजु ।।२।। रामकृस्न-
निकसे मंदिर तें पाछें लागी माजु ।। हसि मुख चूंबि
उछंग लिये गोविंद बलि पूरन भए काजु ।।३।। ।।
।।१।। रागगौडी ।। कदम चढि कान्ह बुलावत
गैयां ।। मोहन मुरली सब्दि सुनत तहीं जहीं जहांत

॥गोवि॰॥

॥५३॥ हांतेंउगिधेयां॥१॥ आवऊआव ऊसखासि
मिटसबपाईहेरे पैया॥ गोविंदप्रभुबजदाऊ
सोंकहेंचपबघरकोंबगदैयां॥२॥ ॥१३॥ ॥
रागगौरी॥ आवतचारेंबधेनु॥ सखासंगश्रु
तिदेतमधुपगनमुदितबजावतबेनु॥१॥ अमृ
तमधुरधुनिपूरितश्रवननिउगिधाईसकल ॥५३॥

६९

नाजिएन॥ हद्देलगाऽवजेश्वरी अंचरपटपों
छतमुखरैंनु॥२॥ अन्मर्द्दनमज्जनकरावतिभू
षणपीतबसेनु॥ गोविंदप्रभुषटरसभोजनक
रिपोढेविमलसेजसुखसेनु॥३॥ ॥१६॥ राग
गौरी॥ षटताल॥ सोहतगिरिधरमुखमंडहा
स॥ कोटिमदनकरिजोरिखपासतवलगितभ्रू
विलास॥१॥ कुंडलकनककपोलगंडछबिना

गोविं॥

॥५८॥ सिकामुक्तप्रकास॥ सोभा सिंधुकहां लौं बरनौं
वारनैं गोविंददास॥ ३॥ ॥५५॥ राग गौरी॥ अ
ठताल॥ गगौरी घालीरी मेरो मन लीयो हरि॥ स
खीरूपामसुंदररी बिनु देखें जुगसमजा निघरी
॥१॥ बदनमाधुरीपीवत मत्तभए ढीगरी अवसे
रेनैननिकों छबिपरी॥ गोविंदप्रभुजब देखतस
खीतबसबसुधिबुधिसबबिसरी॥ २॥ ॥५६॥ ५८

॥रागगौरी॥खेलतआएजाइबैगेब्रजराजगोर
॥हहेलगाइआघुरएलेतासिरकरतमोदमो
द॥१॥सुंदरकरउगारमोगतहंसिचितैतातमु
खकोद॥गोविंदकहेचलऊभोजनभयोबोल
तमातजसोद॥२॥ ॥१७॥रागगौरी॥बनतेंब
नेआवतब्रज॥सिखीसिखंडदलदलकुसुमचू
डरछुरितअलकगोरज॥१॥बनजुधातसांवल

॥ अंगचित्रितउरपंचबरानिस्त्रज ॥ प्रियसखाभु
जअंसभुजाधरिलटकतचलतचालमदगज ॥
॥२॥ अधरसुधाधरिसरंधमुरलिकाली येकं
रजगोविंदप्रभुव्रजवासीहरखतनिरखिबदन
नीरज ॥३॥ ॥१८॥ रागगौरी ॥ मोहनतिलक
गोरोचनमोहनलिलाटअतिराजे ॥ मोहनपाग
परमोहनकुलहीसुरंगअतिराजे ॥ ॥१॥ मोहनम्र

वनमोहनकरकनकुसुममोहनकपोलश्रवतं
सुविराजे॥ मोहनअधरपुटमोहनमुरलीमोहन
कलबाजे॥२॥ मोहनमुखारविंदरूमतमोहनअ
लकअलिमानोंमधुकाजे॥ गोविंदप्रभुनखमो
हनजूघोखसिरताजे॥३॥ ॥१८॥ रागगौरी॥
सखासंगकरतकलोल॥ आवतचारेंमाईधेनु
॥बहरपांडुमुखललितअधरछबिभ्राजतकुंड

गोविं॰ कस
पृ॰ लमंडलकपोल ॥१॥ गोरज छुरितसुदेसं अतिमुकु
टखचितमनिगनअमोल ॥ मृगमदतिलकचपल
सुंदरभ्रूवक्रपारंगरंगेनेंनलोल ॥२॥ उरबनमा
लमधुगंधलुब्धरसलपरातमधुपनिकेरोल ॥
कनककिंकीनीनूपुरकूंजितकलकनकक पि
सकटितटनिचोल ॥३॥ धुजावज्रअंकुशकमलस
जत्तपदनखदुतिकोटिचंदनहिंतोल ॥ चलतचाल पृ॰

गजराजराजमन्नजिमगोविंदप्रभुहसिबोलत ।
मधुरेंबोल ॥६॥ ॥२०॥ रागगोरी ॥ झपताल ॥
रुपामसुभगतनझांई ॥ उमंगिचलीपीतबार
नीमहितेताहूमेंअतिअंगरागसोभाकहानजा
ई ॥१॥ लालपागचोकरीनविराजतकुलहीसु
रंगटिकाई ॥ स्निग्धअलकबिचबिचराखीचं ।
पकलीअरुझांई ॥२॥ देखतरूपगगोरीलागीनेन

गोविं
५७

रहेजुलुभाई॥ गोविंदप्रभुसबअंगअंगप्रतिसुं
दरमनिराई॥३॥ ॥२१॥ श्रीराग॥जतिताल॥ ला
लटिपारेखकिअतिबनी॥ बिचबिचचारुशिखं
डबिचबिचमंजरीनूतविराजनी॥१॥ धेनुरेनुरं
जितअलकावलीसगबगातिसोधेसनी॥ मधु
पजूथचडिउडिबेगतसखी॥ पारिजातअवतंसनी
॥२॥ अंगदवलयकरमुद्रिकाखचितनगकटित ५७

टपीतकाछेकाछनी ॥ श्रीवत्सलछमउरहारविस
दसरवीकंगलसतकौस्तुभमनी ॥ ३ ॥ त्रिभंगभंव
राहस्तभंवरीलेतसुद्दगगततधिमकटिधुंग
धुंगनी ॥ ग्वालतालगतिउघटनी ॥ गोविंदप्रभु
त्रैलोकविमोहितनृतरसिकसिरोमनी ॥ ४ ॥ धनाश्री
रागश्री ॥ होबलि[illegible]नृतमोहनजति देसीसु
धांगप्रबीनगृगृततथेईलेतगति ॥ १ ॥ पीतकाछ

गोवि ५८

कटिलालुटिपारोछबिमोहनअति ॥ गोविंदप्रभु
त्रैलोकमोहितकुमारदोऊब्रजपति ॥२॥ ॥२॥
श्रीराग ॥ गोपवृंदसंगनृततरंग ॥ सरिगमपध
निअलापकरतरसउपजतश्रवधरतानतरंग
॥१॥ लालकाछकटिपीतपटिपारोछबिबनजु
धातुविचित्रसोहतरूपामअंग ॥ गोविंदप्रभुके
जुरोमरोमपरवारिफेरिडारोंकोटिअनंग ॥२॥

५८

74

॥ ॥ ३ ॥ रागमलार राजतिताल ॥ ह्यालमेरी सुरंग चूनरी देऊ ॥ मदनमोहन पियकरो किन बद्यो। सुरूपनों पीतपट लेऊ ॥ १ ॥ तुमव्रज राजकुमार कौन को तुरू ह्यों बकहा कहोंगी गेऊ ॥ गोविंद प्रभु पियदेऊ वेगि मोहि आवत चऊ दिसते मेऊ ॥

॥ २ ॥ ॥ १ ॥ रागमलार ॥ लाडिलो लडाइ बुलाव। तधेनु ॥ चढिक दंबधोरी काजरलेले नांउ प्रतम

गोविं०॥

पद॥ धुरसुरबेनु॥२॥चुचुकारतपोंछतसुंदरकरसक
लसुभगसुखरेनु॥ गोविंदप्रभुकोमुखारबिंददे
खेसववस्तननिपयफेन॥३॥ ॥राग मलार॥
ताल॥ कुंवरचलजआ गैंजगहवरबनमेंज
हांबोलतमधुरेमोर॥ बिकसितवनराजीहैंको
किलाकरेरोर॥१॥ मधुरबनसुनतप्रीतमकेलानो
प्यारीचितचोर॥ गोविंदप्रभुबलिबलिबलिबलि॥ पद॥

पीयप्यारीकीजोर॥२॥ ॥३॥ रागमलार॥ गाव
तरसिकराइघोषन्नपतिकुवर॥ तीसरेस्वरसंच
बाधिरतनखचितच्युधोटीसोहेद्दछिनकर॥१॥
रागमलारअलापतचोरवेंतानतुमनहस्योगंध
वेजेतेसुघर॥ गोविंदप्रभुपरकुसुमबरखिकहें
जेजेजेजुसकलकलाप्रवीनअतिसुघर॥२॥ ॥धो
रागमलार॥अवताल॥ श्यामहिंदेखिनाचेवनमु

गो॰वि॰ ६१

रितमोर॥ ओरतापरआनंदउमगिभरेसुनसमु
रलीकलघोर॥९॥ चहूंदिसतेंकोकिलाकलकूं
जतअरुदादुरकीघोर॥ गोविंदप्रभुसखासंग॥
लीयेंबिहरतबलमोहनकीओर॥१०॥ ५॥ राग॥
मल्हार॥ आईजुउपामजलदघटा॥ चहूंदिसतें
घनघोरेंदंतिअतिरंगभरेबाहांजोटीफिरेंकुसु
मबीनतसुकालिंदीतटा॥१॥ नेन्हांनेन्हींबूंदनब ६१

रखन लागे तेसी ये लहकदामिनी छटा ॥ गोविंद
भुपिय प्यारी उ गि चले बोह रिलाल पट सो टेरिली
योजाइ बंसी बटा ॥२॥ ॥ दी रागमलार ॥ पद ताल
॥ पावस नट नट नाक्ष रवारो हे हा वन अवनी रंग ॥
नृत्त त गुन रा सिबरु हापपी हा शब उ घटत अरु
कोकिला गाव तितान तरंग ॥१॥ जलधर तहां मंद
मंद सुलप संच गति भेद तत रपित रपि मान लेत सरस

गोवि॰
६१

मृदंग॥ गोविंदप्रभुगोवर्द्धनसिंहासनपरबैठेसुर
भीसखासभामधरीझेललिततत्रिभंग॥१॥६॥ ॥
रागमल्लार॥पंचताल॥ वृंदाबनकनकभूमिनृत्त
तब्रजनृपतिकुंवर॥ उघटतशब्दसुमुखरसिकगू
ढततततततथेईथेईथेईलेतसुघर॥१॥लालकाछ
कटिकिंकिनीझनाझनागति॥ बीचिबीचिमुरलीधर
त्तक्षधर॥२॥ गोविंदप्रभुकेजसमुदितखाकरतप्रसंसा ६१

प्रेंमभर ॥२॥ ॥८॥ सामंतमलार ॥ इकताल ॥
आजुलाल निरसभरे निकुंजमें दिरमैंवे ग्येप्यारी
संग॥ करतमदनकेलिसुखसिंधुरह्येंफेलिकं
जुजमेलिगावतसुघरहोकतानतरंग॥१॥कहा
कहोंभावरिकुसुमग्रथितकबरीसीसफूलगज
मोतीखचितसुभगमंग॥गोविंदप्रभुचित्रकरत
प्यारीउरसिपुलकितप्रेंमभरसोरंसंगप्रसेदक्ष

गोविं॥

६२ ॥ निबिपथसकलञ्जंग॥२॥ ॥९॥ सामंतमलार॥
अबहीरंगराख्यौमुरली में कहाकहूरीलालासु
र॥ तानतरंगसुरभेदअस्त मिलवत विकटअव
घर॥१॥ चोखमांखनी कीरेखतामेगायनकोरे
रतलांबेलांबेसुर॥ बीचिबीचिलेतवुलारोनात
सुनिरीप्यारीगोविंदप्रभुब्रजरानीकेकुंवर॥२॥
॥१०॥ रागसामंतमल्लार॥ इहांकहांदानुदेख्यौ ६२

नसुन्यौकाहूकांन ॥ ऐसेउकटउगवतकितमोह
नजूहूथ्रहयौलीयोचाहतहोमेरेजांन ॥१॥ गो
रसलीयेजातआपुनेभवनरीतापेइतेंमानीक
छुआंनकीआंन ॥ गोविंदप्रभुसोकहेप्यारीकी
खौचलोजसुरानीपेंनातरूसधेऊंजांन ॥२॥ रे
॥ ५ ॥१॥ सामतमलार ॥ यतिताल ॥ कबकी
बकतिप्यारीअजहूंनरिसगईमोंहनमोंनधरे

गोविं ॥

६३ कहतकछुनरीकान्योनकछूकरतसनमुखहां ॥ १ ॥
खरतज्योंज्योंबरजीत्योंत्योंभईहूनहूनरी ॥ १ ॥ बा
वरीभईरीप्यारीमेरेजानपियाकस्योनकाहूको
मान्योतुवहूदोसूनरी ॥ गोविंदप्रभुचरनपरसि
आंकोभरिमिलेरंगुरह्योंजैसेंहरहचूनरी ॥ २ ॥
॥ ॥ ६ ॥ सामतमल्लार ॥ पटताल ॥ गुनरूपराधे
प्यारीकोंनकरीतेरीपटतर प्रियप्रभुनिजगजुव ६३

79

तौवारिडारोंरी तेरेरूपपर ॥१॥ गावत रागमलार

सकलकलाप्रवीनहेरीतुसुघर ॥ गोविंदप्रभुकों

तूंम्याईरीबसकरतकहतभलेंजुभलेंव्रजराजकुं

वर ॥२॥ ॥२३॥ ॥ अथ हिंडोरा ॥ रागमलार ॥

तेसोईवृंदावनतेसीएहरितभूमितेसीएव्रजवधू

चलतिसुहाईमाई तेसीएकोकिलाकलकूहकु

गोविं
६५ हकूजतितेसेईनाचतमोरनिरखतनैंनासुख-
दाईमाई ॥१॥ तेसीनवरंगनवरंगबनीजोराधेसी
एगावतरागमलारसबतानमनभाई ॥ गोविंदप्र
सुरंगहिंडोरेंझूलेंझूलेंमनहींमनचहूंदिसतेंजो
घटाजुरिआईमाई ॥२॥ ॥१॥ रागमलार ॥ झूलत
रंगहिंडोरेंराधामोहन ॥ बरनबरनचुनरीपहरें
६५

ब्रजबधूबरुओरें ॥१॥ रागमलारमलापतसम्र
सुरनितीनग्रामजोरे ॥ मदनमोहनकीयाछबिक्र ज्र१
परगोविंदबलिबिनुतोरे ॥२॥ ॥३॥ ॥रागम
लार ॥ रंगमच्योसिंघद्वारहिंडोरेबमूलनां गोर
स्यामतननीलपीतपटघनदामिनीइंउविराज
तनिरखिनिरखिव्रजजननमनफूलनां १ उरप
रबनमालसोहेइंउधनमांनोंउदितभयोमोतिन

मोवि॰ ।।

६५ मालवगपंगतिसमल्लनां ।। बरखततनवरूपवा-
रिधोषक्षवनिरतनफूलतगोविंदप्रभुनिरखिनि
रखिकोटिमदनभूलनां ।।२।। ।।३।। रागमल्लार
।। फूलतआंईव्रजनारिप्यारेलालकेहिंडोरनां
।। सुभगकंचनतनपहरेंकसुंभीसारीगाव
तपरस्परहसिम्दुबोलनां ।।१।। इतनंदलालर
सिकसुंदरवरउतवृषभानसुताछबिसोहनां ।। ६५

रमकतरंगरहलोपियप्यारीगोविंदबलिबलिर
तिपतिमोहनां॥२॥ ॥धं॥रागजेतसरी॥ऋठभ
ताल॥झूलतदंपतिसुरसहिंडोरे॥गोरश्यामत
नअतिछविलागज्योंघनदामिनीजातिहभोरे
॥१॥विद्रुमखंभखचितनगपटुलीकनकडांडी
सुबलितसुदोरे॥गोविंदप्रभुकोंदेखिललितादि
कहरखिहरखिहसतिसबनवलकिसोरे॥२॥ ॥

गोविं
९९

॥ ॥ पु ॥ राग हमीर ॥ पट ताल ॥ घेरो घेरो व्रजनारी मैया हो जोंन ज्यों न पावै ॥ चली ए जात कित रन ही देत लेऊं छुडाइ कर तें मटुकी अरु दीन्द देखी भारी ॥ १ ॥ खरिकु हाए गोरस ली एं जाति आपने आपने भवनता को दांनु मांगत जैसें काहू न्हारी ओंगासुपारी ॥ गोविंद प्रभु आए लसनो खेदानी चलो चलो री बुलावत घरकें लाल विहारी ॥ २ ॥ ॥ १ ॥ राग ईमन ॥ ९९

मानिरीमनायोमानिभामिनी ॥ नातनिकतआरि
करतहेरीलालनुकबकेबैगेघटतिपलुपलुजांम
नि ॥ २ ॥ जदपिबुजही तें धरतकंगमोतिनलर के
चनतनबरनतेरोयालगुधरैंरहलुथीगंबर ॥ २
तुवकंवछतिसोंमिलतकछुयाहीतेंधरतवंसी
अधर गोविंदप्रभुइमकहतप्यारीसोऽनबातन
तेंहोंजातवाथिनिवासर ॥ ३ ॥ ॥ ६ ॥ रागईमनगो

गोविं॰

६७ युवति सकल कोंन काज ईरी तौ बिनु कामिनि ॥

गोविंदप्रभु बलि बलि पाउं धारिये पिय सन मु

ख गजगामिनि ॥ २ ॥ ॥ २ ॥ राग ईमन ॥ बोलत धे

नु गोवर्द्धन गिरि चढि ॥ मोहन मुरली धुनि सुनत

श्रवण वेध वजी काज रंगा गुर निहरानि मुरिधा

ई प्रेम बढी ॥ १ ॥ आसपास सब घेरि रहीं व द्वापर

द्वापर चढी ॥ गोविंदप्रभु हस्त कमल पर सुकी ॥ ६७

योवेतातेंअतिहृनेहृधचद॥२॥ ॥श्रीराग ईमन॥ मांनिरीमांनिमेरोजुकह्यो॥ गोपीनाथकुंवरबोलेरोंजुललनसोंपेजकरिआईतेंजुकरीनेनमिनहिंयानातेंमोपेंकह्युनरह्यौ॥१॥ घोरवनृपतिसुतबऊबहनभकोंनसुकृतिफलतेंजुलह्यौ॥ गोविंदप्रभुसुहागबसकीनेतातोपरनबिचित्ररसछिनुछिनुछिनुजातनह्यौ॥२॥ ॥ध

॥ राग ईमन ॥ कुंवर कान्ह छांडो हो ऐसी बतियां ल
जनु कत करत बरियाई ॥ ज्यों ज्यों बरजो त्यों त्यों भ
एरे हमें ही रोकत हो नारि पराई ॥ १ ॥ दही दूध
को दांनु का है कब है न सुन्यो तुम ही यह नई चला
ई ॥ गोविंद प्रभु सों कहत प्यारी की सखी री बए बातें
तुम ही फबी आई ॥ २ ॥ ॥ ५ ॥ राग ईमन ॥ कन
क कुसुम अति सोभित प्रवमनि ॥ घूमत अरुन नत ॥ ६८ ॥

84

रूनमरमातेमुसिकातअनिअनि॥२॥गोलपाग
परकुलहसुरंगतामेअलकरेखबनी॥ गोविंद
प्रभुत्रैलोकविमोहतकंठलसतकौस्तुभमनि
॥३॥ ॥६॥रागईमन॥सखीआजुमोहनअ
तिबनें॥सीसटिरीफहरात॥बरुहचंदअलक
बिचबिचराखीचंपककलीगनिगनि॥१॥ला
लकाछबिछुडघंटिकानूपुरफि॥निझिनात

गोविं. ॥

ति लेत गत गत ताल थेई रंग सनें ॥ गोविंद प्रभु रस रंग

भेद नृत्त तत सकल कला प्रबीन ब्रजन्रृपति न य

ने ॥ २ ॥ ॥ राग ईमन ॥ तेरे सुहाग की महिमां

मोपें बरनीं न जांई ॥ मदन मोहन पिय वेबज्ञ नाय

कता को मन लीयो हें चुराई ॥ १ ॥ क वरी कुसुम गु

हत अपने कर लिखत तिलक भाल रस भरे रसिक

राइ ॥ गोविंद प्रभु राज हदे सों लगाइ यलई लाडिले ॥ १५

कुवरमनिभाई॥२॥ ॥८॥ रागईमन॥ कद्दी
नपरेरसिककुंवरकीहोकुंवराई॥ कोटिमदन
मुखजोतिविलोकितपसरितनखचंडकिरनि
जुन्हाई॥१॥ किंकिनीवलयहारगजमोतीकंठम
निदेखियतअंगअंगमेंझांई॥ सुघरसुजानसरू
पसुलछनगोविंदप्रभुपियसबबिधिसुंदरता
ई॥२॥ ॥९॥ रागईमन॥ कुलहसुरंगवनीमो

७० मोहनसिरपाग॥ कुसुमनिभरिलटकनअस
तापरसेहरेचंपककछविलाग॥१॥रूपनलाल
पीतबर नीओरसँगराजामोजेसुरूपामसुभाग
॥ गोविंदप्रभुकोजुब्रजवासीछिनुछिनुअनु
राग॥२॥ ॥९०॥रागईमन॥जतिताल॥लाडि
लेलालबदसिकहानपरेकुलहचंपकभरी
अतिसुगंधपागलटपटीरहीआधेसिरधसि ७१

॥ १ ॥ बरनीपीतअरुछूटेबंदअरगजाभोजेसो
भानुपामदउरसि ॥ गोबिंदप्रभुसुरतिसिथलदंप
तिप्रेमगलितबैठेकुंजमहलतेंनिकसि ॥ १ ॥ ॥

॥ १ ॥ रागगौरीमन ॥ रसिकसिरोमनिरागकल्यान
गावे ॥ अवघरबिकटतांनतरंगउपजावे ॥ १ ॥ सब
बिधिरसिकरसालमोहनबेनुबजावे ॥ गोविंद
प्रभुकोंजुवरभानननंदिनीरीझिप्यारीकंठलावे

॥ गोविं ॥

७१ ॥ २ ॥ ॥ १२ ॥ राग कल्यान ॥ झपताल ॥ दंपति रंग भरें बैठे कुंज महल ॥ राग कल्यान अलापति विहसि करि करि लेत परस्पर रंग वितान तरे ॥ १ ॥ तन तन अति गति भेद करि कैं नरी एक सरि टोक तां न सुढार ढरे ॥ गोविंद प्रभु बलि बलि पीय प्यारी बाजु भरें दोउ अति सुघर रवरे ॥ २ ॥ ॥ १३ ॥ राग कल्यान ॥ धमार ॥ आजु बनी अति सारंग नैं ७१

नी॥ मदनमोहनपियरचिपचिरखचितगंथतब
नाइबेनी॥४॥ मृगमदतिलककलिखितभालसक
लकलागुननिधांनरूपकीएंनी॥ गोविंदप्रभु
रसबसकीनेंसुहागतेंसुमदनमोहनपियसुख
देनी॥५॥ ॥६॥ रागकल्यान॥ कैसेंहूंबरज्योंन
मांनेमहरिपूततेरो॥ बलिमोहनकीजोरिझरु
बालसंगलीयेमरकटघेरेंफिरैंपाछेंछूटतहै

गोवि
७२ घरमेरो ॥ १ ॥ दह्यो दूध मांखन घृत तनक न उबर
त केसें कें बसें बासु होई हम केरो ॥ गोविंद प्रभु के बा
ल बिनोद सुनत ब्रज रानी मन मन मुसिकांनी
सांचा हों कहत अनेरो ॥ २ ॥ ॥ ९५ ॥ राग कल्यांन
॥ जतिताल ॥ दिन ह्वों हम आई गई इहिं मगु ॥ अब
कछु नई एगटी ॥ जेसे हो तेसे राज करो जू सदा अप
ने ब्रज हो तुम्हारे लाल नलागियेहु हरि तें पग ॥ १ ॥ अ ७२

वकहाकहतसोईकहोलाडुकैंवरहमेतोसमुझ
नांहीबातेंअपथरा॥गोविंदप्रभुकीअटपटीलटप
टीचलीराजातएसीकोगनेरीमाईबडेअपामनग॥
॥२॥ ॥११६॥ रागकल्यांन॥ हसिडारीपीकहोअं
चरापरी॥होंजुचलीएजातिगरी॥मोहनबैगेछाजे
निरखिबदनगृहतननपरतचरनकछुकसकु
चमेंव्रजजननकीजीयधरी॥१॥सुंदरकरकमलफे

गोवि
७३

रिकेसें नदई जहां निबिडकुंजदरी॥ लेचलिरीमोहि
जहां री गोविंदप्रभु रस्योंन परत प्रियाप्रेम हरो भ
री॥ २॥ ३७॥ रागकल्यांन॥ पटताल॥ ललनमु
खकी हो लुमाई॥ कैसें कें बरनीजाई॥ भालतिलक
भृकुटी अलक बीच रचं पक कली अरुझाई॥ १॥ अ
रुन नेन मातेमदतरुन बरखत करुणा अधर अ
मृत मंदहास की रेनजुन्हाई॥ सुभगकपोलमृदुल ॥ ७३

बोलनगोविंदप्रभुकेजसुंदरमनिराई॥१०॥४९८॥
रागकल्यान॥ऊपमाला॥तकतकथुंगथुंगनितट
कथुंगनि॥एकचरनकरसोंभलेभवेहोम्रदंगव
जावे॥दूसरेचरणसोंताछतिकिटिझिंझिऊपता
लमेंस्रवघरगतिउपजावै॥१॥कंगसरससुरगा
वैमोहनमधुरतानलावैसकलकलापूरनहरख
भांननंदेनी।पियमनभावै॥गोविंदप्रभुरीझिरहे

गोविं॰
७८ ॥ मुरझाइ रसन दसन धरि कें तब रहसि उरसि आवे ॥२॥ ॥ ८१ ॥ राग कल्यांण ॥ जति ताल ॥ हे हे हे धोरी धूमर गांग बुलाई गोवर्द्धन चढि टेरी ॥ स्यामजलद गंभीर गरज अति मंद मंद स्वर मधुर २ अति सुनत श्रवन फिरि हेरी ॥१॥ दूध धार धरनी सींचत आई सबें पूंछ के फिरि फेरी ॥ गोविंद प्रभु को मुख अरविंद देखें री हूं किहूं कितब आसपास रही घेरी ॥२॥ ७९

॥१॥ ॥२०॥ राग कल्यांन ॥ इकताला ॥ कह्यो मानें

जो मेरो रसिक कुंवर बलि जांऊं ॥ पेंडे तें इत सरको

कोंन टेव तिहारी वारो कहा तें भयो भट भेरो ॥१॥

अ हिंडरु रुरि फिर तस कल ब्रिज सोई मो कों

आनि भयो घरा घरी ऊरो ॥ गोविंद प्रभु सों भोंह मो

रि तिन तोरि कहें प्यारी कोंन सुभाउ तुम केरो ॥२॥

॥ ॥२१॥ राग कल्यांन ॥ झपताल ॥ कब की निहोरो

७५ करनिरीख भानसुता तो सों कह्यौ जो मानेजो मेरो
॥ मदनमोहन नव निकुंज द्वार बैठे तुव पथ निहा
रत तेरे ऊगरे री सकल रजनी बीतति ॥ अजहूं क
त करत छिनु उपलऊ केरो ॥ १ ॥ शृंगार हार साजि ले
हि सपनेझान पियेसुखु देहि तेरे री साची जिय
अजहूं कछु फेरो ॥ गोविंद प्रभु हरके रोम रिबिर
ह संधेरो ॥ २ ॥ २२ ॥ राग कल्यान ॥ इकताला ॥ नं ७५

दलालसोंमानननजिबोरी॥ बेबऊनाऽकएतेमेरा

जकुमारमेरोकह्योसुनिप्यारीलागेकिनित्रोरी

॥१॥ कुवलयदलकुसुमसेज्यारचीतुवपथजो

वतधोरी॥ गोविंदप्रभुमिलियोराजेगीज्योंदा

मिनीघनसोंरी॥२॥ ॥२३॥ रागकल्यान॥ इक

ताल॥ जतिताल॥ बेनुबजावतरीमोहनकल॥

वामकपोलवामभुजपरधरिबलिभ्रबरसचप

गोवि॰

७६ लहंगंचल ॥ २ ॥ सिंदुरासुरण अधरसुधारस पूरत

रंधुम ऊपर अपंगी दल ॥ अवयर विकट तानउप

जितरसगोविंदप्रभु बलिसुचर अनुजबल ॥

२ ॥ २४ ॥ राग कान्हरो ॥ कल्यान ॥ मान छुटि

गयोरी मोहन निरखित बदन ॥ नैनसों नैन मि

लत मुसिकानी परस्पर एमिलत ही गयो बिरह

दुखक दन ॥ १ ॥ सुभगकपोल लोल कुंडल छबि ७

री ऋस सुगुन सरूप रेख मदन ॥ गोविंद प्रभु मुख सो
भा पर वारि फेरि डारों कोटि मदन ॥ २॥ २५॥
राग कल्यान ॥ कहत कहत सब रैन गई अब न
हिं मानत प्यारी हो ॥ समुझाई समुझत नहीं मेतो
करी ये निठुर देखी भारी हो ॥ १॥ छल बल बुधि
तनी कीयो मेरी तो चरन रसना हारी हो ॥ अब ना
हिं नेंक पाउं कछु आगु न चलियें गोविंद प्रभु जु

बिहारी हो ॥ २ ॥ ११ ॥ राग कल्यान ॥ मेरी री हों
बलिबलि बलिजांउं गिरिधर नछबीले कुल
ही छबीली अरूपाग छबीली अलक बीले ति
लक छबीलो प्यारी जू के रंगीले ॥ १ ॥ अधर छ
बीले अरु हस न छबीले वैन छबीलो सरस सु
रहीले ॥ गोविंद प्रभु नख सिख सब सुंदर अं
ग अंग लल चतुर सीले ॥ २ ॥ ११२७ ॥ राग कल्यां ॥

न॥ पूजनचलऊकदमबनदेवीश्राइहेहमारे
कोऊसंग॥ भावभगतिमांनतसबहिनकीब
लिनकाहूकीकछुलेवी॥१॥ व्रजवतिसकल
घोखकीकामनासीतलसुखदसुरसपुरसे
वी॥ गोविंदप्रभुसोंकहतिहरखभांननंदिनीसु
नाइसुनाइकछुकबातश्रोरेबी॥२॥ ॥२८॥
रागकल्यांन॥ तुमसौंसोवारकहीनहियां हा

गोविं०

७८ मारेकुलदधिनबेचिये॥ जोपैंदधिबेचियेतोतु
मतेंकोलेवाहिसुनिब्रजराजलाडिलेकतबग
हतबहियां॥१॥ खरिकतेंगोरसलीयेंजातिभ
वनआपुनेंताकोदांनमागतकहाकहियेअ
बउनसहियां॥ गोविंदप्रभुसोंकहतप्यारीकीस
खीचलउबलिजहांबेगीरांनीसुहियां॥२॥ ॥

॥ ॥२८॥ रागकल्यांन॥ अतिरसमातेतेरे री ७८

नैंन खरे ई चपल दोरि दोरि जात छुअन्न व निपर
॥ हंसि हंसि मिलवत करि कटाछ मांनों कंद त
रजनी रति बेन ॥ २१ ॥ सग बगी खालन स बदन प
रवि पुरी प्रफुलित अंग अंग मेंन ॥ गो विंद
बलि सखी कहें मेंतुतब हां उखां तब ही तें मेरे
जिय अति सुख चैंन ॥ २२ ॥ ३० ॥ राग सोरठ ॥ क
हां न मोंटे रिक हत ब्रजवासी इउ सि साइ बरसो

गोवि
१९

व्रजऊपरनेकुनहेतउसासी ॥ १ ॥ तुम बिनुकोस
मर्थकोनंनंदसुतमेंटनकोंउखरासी ॥ तब
गिरिधरकरधस्योगोविंदप्रभुमघवारह्योखि
स्यासी ॥ २ ॥ २ ॥ राग कान्हरो ॥ जतिताल ॥ सो
हतमाईनासिकागिरिधरगजमोती ॥ बोलत
बीराखातहसतडोलेअरूनअधरकीदीनीपो
ती ॥ १ ॥ कुंडलकनककपोलमंडितछबिजगम

गानमुखमंडलजोती। गोविंदप्रभुकोंमीमुखदे-
खतरसनाकहाकहिसकेबोती॥२॥१॥राग
कान्हरो॥इकताल॥ आजुकोबानकलालनक
हीनजोई॥ रहिधसिपागलालआधेसिरकुल
हचंपकतापरहीरालठकाई॥१॥ बरनीपीतपट
रछूटेबेदूअरगजामोजेंतनप्रतिबिंबितनपाम
झाई॥ दरसनीयवनमालतिलकुदेखेंविथके।

गाव॰
८० ॥ कोटिमदनअरु गोविंद बलिबलिजाई ॥२॥ ॥२॥
राग कांन्हरो ॥ जतिताल ॥ आजुमाईबनेरी लाल
गोवर्द्धनधर ॥ रतनखचितछाजेपरबैठे इंद्रादरप
पुरंदर ॥१॥ ग्रथितकुसुमअलकावलिअतिछ
विधुनितमधुपअवतंसनिपर ॥ लटकिलट
किजातश्रीदामाअंकमेंहसिमिलवतंरसोंक
२॥२॥ मनिकौस्तुभहृदेपदेकजगमगातकंठ ॥ ८
क

लसतगजमोतिनकोलर॥ गोविंदप्रभुगुसकल
भुजमोहो अंगगअंगललननसुंदरबर॥३॥ ॥३॥
रागकान्हरो॥ अधरमधुरपूरितमुखरितमोहन
वंस॥ चलतहगंचलकरजक्षतिविधुलितपास्आ
तअवतंस॥ १॥ मोफगजराजकलभक्षतिमहग
लआवतलटकतए भुजाधरेप्रियसखाअंस॥
गोविंदप्रभुकोजुम्मीमुखदामाप्रन्हतिजयजयबलि

गोविं
८१ करतपसंस ॥ २ ॥ ॥ ४ ॥ रागकान्हरो ॥ नैनछबी
खेतरूनमदमाते ॥ चंचलभ्रकुटीचलमछबिअप
जतिअंनिअनुसिकाते ॥ ॥ भक्तिकृपारससदाई
प्रफुलितमनअंकमलदलराते ॥ गोविंदप्रभुश्रीमु
खदेखतपानकरतनअघाते ॥ २ ॥ ॥ ५ ॥ रागकां
न्हरो ॥ नवलनागरीसंगनवलनाई ॥ नवलकुंज
विहारीमनमथमनुहारीसुरतिकेलिअंगअंगसु

खराई॥ ११॥ नवल रागु कांन रो कहतसु घर नवलन
वलतां नलेतमन भाई॥ नवल रंग दंपति गलित
गोविंद बलि बलि जाई॥ १२॥ ॥ ६॥ राग कांन्हरो॥ रू
पारस ने नां कमल फूले॥ भुवविलास टेखे कोटिम
न मथ रहे भूले॥ १॥ कमल बदन पर कुटिल अलक
छबि मो तिन जु बतं सरहे झूले॥ गोविंद प्रभु प्या
री संग बैठे कालिंदी कूले॥ २॥ ॥ ७॥ राग कांन्हरो॥

गोविं॰
८२

॥पटताल॥ रंगमहलमें रंगीलो लाल बेठे रंगभरे॥ हसिगिरिजात डियसि अंकमें वल्गुहास रसमत्त परस्परमनहरे॥१॥ कुचअंतर गाढो आलिंगनु देत ललनु प्रियाभुजबसवरे॥ गोविंदप्रभुप्यारी संगबैठे गावत तान वितानतरे॥२॥ ८ ॥रागकान्हरो॥ प्यारी कमलबदन तेरो॥ ताते धरें रहत री होकमलही कर॥ बरहा चंदनैन निकछुअनुस॥ ८

रेप्याही तेंरहतहेरी माथेंपर॥१॥दसनजोतिकनुहा
रियाही तेंधरतकंगमोतिनलर॥कंचनतनबरन
तेरोयातनगुधरेंरहतुपीतांबर॥२॥तुवकंगम्कति
सोंमिलतकछुयाहीतेंधरतबंसीअधर॥गोविंद
प्रभुईमकरहतप्यारीसोंइनबाततनतेंहोंजातवा
धिनिबासर॥३॥ ॥९॥रागकान्हरो॥जतिताल
सावतिराधिकाप्यारी॥जुबतीजूथमेंबनी॥निक

गोविं०
८३ निकसिसकलब्रजराजभवंनतेंसिंघद्वारगटेलल
नुकुंवरगिरिधारी॥१॥निरखिवदनभोहेंमोचितोरि
तिनुझोरेचालझोरेंचितवनितिहिंछिनुअंचल
नसंभारी॥घूंघटकीओटहोइलीयाहेंनाललमनुहा
री॥गोविंदप्रभुदंपतिरससुरतितबहहिसोंभरत
अंकवारी॥२॥ ॥१०॥रागकांन्हरो॥झपताल॥२
होंगलीतूंमोहिंकितलाई॥देखोदेखोजोइडरपतिही ८३

११

सोईभईमोहनबेरंगबकेमेंजैबोमेरीमाई॥१०॥रस
नदसनधरैकरसोंकरमींडतरीहतीसोंखिऊति
आनंदहदेनसमाई॥ गोविंदप्रभुकीतेरीमिलि
बातेंतेंहोसबजानतिभलीकीनीभईनगसोंभे
टकराई॥२०॥ ॥११॥रागकांन्हरो॥पदताहा॥तूब
चलिसखीसिंगारसाजिसेबतिकिनिपियपहिप्यारी
॥माधवीमधुरबेलसरीएरीगुलाबकहेंमनुहारी॥१

॥ गोविं ॥

१०४ ॥ यह सुभाव व्रजाई बरजी जहीं तं बने कनेरी के तुकले
समझाइ मानु निवारी ॥ मेरो सिखंडी जो मिले गोविंद
प्रभु तो तोपर के वारो नवल कुंवर कुचबिच चंपो
बिहारी ॥ २ ॥ ॥ १२ ॥ राग कान्हरो ॥ आजु बनी वृष
भांन कुवरि कहे हृती अंचलाधार तितूं नतो रति करि
ति भलें जु भले भामा ॥ बदन जोति कपोलनि दि
छूटी लर मोतिन सदा सिंगार हार कुचबिच चलति ।

100

सोभित बोलसरी दामा ॥ २ ॥ एक रसना गुन रूप कैसें
केंबरनों बिसरत काेर तिन्अंग अंग अतिप्रबीन पीय
मनअभिरामा ॥ गोविंद बलि सखी कहे रचि पचि
बिरंची कीनी श्यामा रमन कों माई तंही है श्यामा ॥ ३ ॥
॥ ॥ ९३ ॥ राग कान्हरो ॥ ऊपताल ॥ होंतो सों बकहा
कहों प्यारी लीरी कोन बेर की बैठा बतिही मोहि ॥ मदन
मोहन नव निकुंज में कब के निसि जागत हैं प्रीति की

गोविं॰
८५

तोरहोइतनीसकुचनाहिनैंतोहि॥१॥अबकहाआ
यसुहोतहैबमोकोजतुमहीतोसुहागकेबरआवै
सबसोंहि॥मोहिकहातेंरोईआनप्रीतमसुखपावै
सोईगोविंदप्रभुअपनेकंठराखेपोहि॥२॥ ८५॥
रागकान्हरो॥लालनमनायोमाननतिनहीलाडि
लीप्यारी॥अतिकोपभरी॥तुम्हरीसोंअनेकजतन
छलबलकरिमेंकीयेमानतोअबघटननाहींसों
170

त्योंऽपतिसतरसतरहोतिहेखरी ॥ १ ॥ सामहामहंड
मेदएकोनहीं चितचुभततापरहोंपाइपरीहंतत्त
नधरी ॥ नाहिनकछुऔरउपाउआनिबन्योय
हेहागगोबिंदप्रभुसोंपुनबहियेतुमदेखतहीं
वाकोमानछूटिजेहेतिनहींखरी ॥ २ति ॥ ४५ रागका
न्हरो ॥ चौताल ॥ मदनमोहनदेखतअखा
रोरंग ॥ मुरलपसंचलगतिबरूहचंदनचकरत

गोविं॰॥
२६। कोकिलकुहूकुहू ताननतरंग॥१॥घटतशबदपपी
हापीउपीउकरेमधुबुतगुंजमनोरसरासउपंग॥
गोविंदप्रभुराऊ बसकलसखासहितजलधर
सुधरबजावतमृदंग॥१॥ ॥२६॥रागकान्हरो॥
देऊलालडंडरियामेरी॥ निहोरोकीजतुहेंउअबा
रसंगकीजातिहू रिपियकोंनठेबतेरी॥१॥जदपि
गांउकेगकुरसबकेलाडिलेतो तोउहोपैंडेमेंब॥ २७

जवधूरारवीहोछेरिघेरि ॥ गोविंदप्रभुरोकचतु
रनागरगहिडारीतहांजहांकुंजकुटीअंधेरी
॥ ३ ॥ २७ ॥ रागकान्हरो ॥ अठताल ॥ बरजोबर
जोबरजोरांनीजूमोहनमारवनचोरीकरतफि
रत ॥ मारवनचोरीकरोभलेंकरोताकोकछुनक
रेरीमाईओरचोरीकतकरतताकोरांनीतुमअ
टकोदेरवतहीमनुहरत ॥ १ ॥ सुधिबुधितनगति

गोवि॰ ॥ ८७

सब बिसरी आवे न कछु गृह काज करत ॥ निसुदि
नु फिरति संग लागी गोविंद प्रभु के मातासु नि
सुनि मन में हरखत ॥२॥ ॥८८॥ राग कान्हरो
॥ को नेंदा न दी नो होवृज राज राई ॥ हहिं मारग
हूं मनि तहीं आवति जाति अब कछु नई एचलाइ
ई ॥१॥ जो पें नहीं जान देत तो चलोरी उलटि घर
इ ने तो सब पकवे करत मन भाई ॥ गोविंद प्रभु के

नेन निसोंनेनां मिलेसकुचिचितै बचलीमुसि-
काई ॥ २१ ॥ २६ ॥ रागकांन्हरो ॥ नृततरासरंग
रसिकरसभरें ॥ सुलपसंचगति लेतग्रग्रततत
थेईथेई बाजतम्रदंग ॥ १ ॥ तालजंत्रकिन्नरी-
कातरभेदतेसीएमिलतधुनिसरसउपंग ॥ गो
विंदप्रभुजुरसमातीजुबतीजूथजनम्लपत-
कुसुममोतिनमंग ॥ २ ॥ २७ ॥ रागकांन्हरो ॥

103

गा॰वृ॰
८८ ॥ पटताल ॥ सुंदरसबअंगरूपरासिराईरी ॥ मु-
यतकुसुमअलकावलिधुतमधुपअवतंस-
निकटकतसिरआलपागसोभाकछुकहीन
जाईरी ॥ १ ॥ सुरंगकसूंभीबरनीज्रमतबद पी-
तविविधिमोजेंप्रतिबिंबितस्यामसुभतनमा-
ईरी ॥ गोविंदबालिबलिबानिकपरत्रिभुव-
नमनमोहतरीकोटिकामवारेंनखकिरनि ८

जुन्हाईरी ॥२॥ ॥२९॥ राग कान्हरो ॥ गिरिधर कोंन प्रकृति तुम्हारी अटपटी सघन बीथिनि में ब्रजवधू मारग में अटको ॥ तुम सोंग लेबू लें फिरत हो ज्ञानि सुदि तुह मग्र ह काज करें कैसें माई रीई तउत नैंब चि बचिनि कसत ह्रेही जा तमटको ॥१॥ दानु दानु करि राख्यो कैसें दानु लेहो औसर का है कों मारत हो गालनपटको ॥ गोविं

गोवि॰ ॥
८९ प्रभुरूपाएअनोखेनएहानाव्रजसुनिरीसखीच
टमटकीएंमटको ॥२॥ ॥२२॥ रागकांन्हरो ॥ उक्त
ताल ॥ तेकछुघालीरीमोहनस्मिरमोहनी ॥ दुहत
धेनुपीयरतिनायकसुंदरकररखितबकनक
दोहनी ॥१॥ तेरेसुहागकोप्रतापनकह्योपरेमन
स मोहनबझनायकबंकीयेरीअमटकमोहनी ॥
चितवनिचलनिहसनिछबितेरीगुनसबतेरे ८

गोविंदप्रभुस्ट्रदेपोहनी॥१॥ ॥२३॥ रागकांन्हरो
॥ देखोदेखोमुरलीभ्रकुटीनचावति॥सप्तरंध्र
गाइनिसंगगावतभवरितमगिसुरतिस्रुतिधा
वति॥१॥उघटतशब्दसुधरदोऊपियकेअंखियां
पचकरतालबजावति॥कोचटअरूघनघात
अनागतचपलकरजुगगतिभेदजनावति॥२॥
कुंडलरीझिसिरनावतअलकसभाकुसुमनि

गोवि॰॥
२९॥ नरखावति॥ बसहा चंदधुकि कें देखतति छकु
चहि गोविंदप्रभु ओसरख विपा वति॥३॥ ॥ रध
रागकान्हरो॥ जतिताल॥ धनि२ हरिदास रा
ई॥ मन अंग सेवा करत सकल बिधि तातें मन मो
हन जिय भाई॥१॥ कंदमूल फल फूल भेट दे सि
ंघासिंघासन रचीबनाई॥ कोमल तृण गाइ नि
चरिबे कों सीतल सीव झिरना जु बहाई॥२॥ विवि

धिकेलिकीउतसखनिसंगछिनु२उतरतचढत
घाई॥रामकृष्णकेचरनपरसकरिपुलकितपु
हपितरहतसदाई॥३॥इनकोभागुकहांलोंबर
नोंकोमलकरलीनोंउगांई॥प्रेममुदितयोंकह
तगोपिकागोविंदबलिबलिजाइ॥४॥ ॥२५॥रा
गकांन्हरो॥झपताल॥मुखसोंमुखमेलिदेखत
आरसी॥विकसतनीलकमलढिगमानोउदित

भयोमसी॥१॥निरखिबदनमुसिकायपस्यरकर
नविहसिगिरिजातअंकहसि॥गोविंदप्रभुरीजि
हदेसोंलगाइहृंपतिपरेखेमयसी॥२॥२८१॥
रागकान्हरो॥पटताल॥कुंजमहलमेंरंगभरेखे
लतपियप्यारी॥तेसीयेतरनितनयातीरतेसो
ईसीतसुगंधमंदवहतपवन॥अरुतेसीयेस
घनफूलीजुहीनिवारी॥१॥तेसीयेप्रफुलितबन

राजीतेसीयेअलिकुलरासुनतश्रवनअतिसुख
कारी॥ गोविंदप्रबलिजोरीसदाईबिराजोगावत
तानतरंगबिहारी॥२॥ ॥२७॥ रागकांन्हरो॥ इ
कताल॥ बलिबलिबलिबलिबानिकपरत्रिभुव
नमनमोहत॥ लटकनिनवरंगपागलालसिर
अलकबिचबकुलअष्टकसोहत॥१॥ हसतल
लनमुखकुसुमझरतमानोंअम्रतबोलमेंतिन

सेपोहत॥ गोविंदप्रभुको भ्रुवविलासदेखतको
टिमदनटगटगीलागेजोहत॥ रा॥१८॥ रागकेदा
रो॥ नेकुसुनाओहोएमुरलीमोहनतान॥ एतेमा
नकतहोतबडेसेजानियतसुघरसुजांन॥१॥ प्र
थनेकरलेधरतलालअधरचल्योबहतरागरा
नीतांन॥२॥ फिलपटाइरहीमदनमोहनहरेचा
पिकेंरसनहसन॥३॥ निरखिबदनहसिकहतभे

108

नलेऊ भले सकल कला निधान ॥ गोविंदप्रभु सु
हाग बस कीने त्रिलोकी युवती ऋति निदान ॥
॥३॥ ॥ रागकेदारो ॥ जतिताल ॥ कुंजमहल
में है ललनारस भरें बेठे संगपिय प्यारी ॥ रचित
रुचितरवनी बदनपर मृगमद तिलकु संवारी
॥ घनचय रुचिर चिकुर नाना विधि गूंथत मृदु
उलक चंपक बकुल गुंजा बनि वारी ॥ गोविंदप्र

गोवि॰॥
८३॥

सुरसबसकीनेवृषभानकुंवरि॥ अरुमदनमोहन गिरिधारी॥२॥ ॥रागकेदारो॥ मदनमोहनी सबअंगअंग॥ पीवतनैननिअघात॥ मोहनपा गसिरअतिबनीअरुकुलहचंपकभरीअतिसुरं ग॥१॥ मोहनलिलाठतिलकमोहनअरुमोहन नैनकुपारंग॥ मोहनहेबनमालमोहनअरु मोहनमधुगांनकरतसंग॥२॥ मोहनरागकेदा॥

109

रो आलाप तमोहनमुरलीके तानतरंग ॥ गोविंद्प

भुनखसिखमोहन ॥ जयजयबलि २ जहित

त्रिभंग ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥ रागकेदारो ॥ पटताल ॥ श्या

म कपोलनि मेंकनककुंडलफांई कुंचितकचबि

थुरा सखीजु चंपककली ॥ ॥ १ ॥ विश्वमोहनति

लकुटे खतमनमथमनरह्योलुभाई ॥ गोविंद्प

भुपरकोटिचंदवारोहों किरणजुन्हाई ॥ २ ॥ ॥ ६ ॥

गोवि॰
५६

॥ राग केदारो ॥ अठताल ॥ मांनतु की जेरी पिय सों बावरी ॥ वेई काज कत गिरिधर नैर मन पार। तेरी कहत आंवरी ॥ १ ॥ तब ही कानन ब्रजन पति कुंवर के बके बैगे संकेत गंवरी ॥ गोविंद प्रभु सुंदर कर ग्रंथत कुसुम दांवरी ॥ २ ॥ ॥ ५ ॥ राग केदारो ॥ मदन मोहन बैगे मंजुल कुंज मंडप प्रि- य सि मुदित संग लटपटी पाग आधे सिर लट-

110

किरहीसेहरोचंपककसमेंलालभरेरसरंग॥१॥गो

रोचनतिलककुंडलछबिचारुकपोलसोभातें ३

उपजेकोटिअनंग॥ श्यामसुभगतनपीतपटराज

तअंग २ उछलितछबितरंग॥२॥ रसिकराइरस

मसपियारीसुंदरकरकमलधरतकुचउतंग॥

गोविंदप्रभुसुहागबसकीनेरीषचितमोतिनमं

ग॥३॥ ॥६॥ रागकेदारो ॥ जतिताल ॥ मोहनमुख

रही २

॥गोविं०॥ प्रभु॥ रविंदपरमनमथकोटिकवारों री माई॥ जहीं ज
हीं अंगनिदृष्टिपरत हेतहीतहीलुभाई॥१॥ मृग
मदतिलककुंडलकपोलछबिएकरसनामोपेंवर
नीनजाई॥ गोविंदप्रभुकीबानिकऊपरबलि
बलिरसिकचूडामनिराई॥२॥ ७॥ रागकेदा
रो॥ धन्यधन्यबृंदारण्यकुरंगिनि॥ श्रीमुखकम
लपीवतसखीसादर हसमसारपतिसंगति॥ १॥ व

रनकमलकुंकुमरूषितत्रिएकुचअवलेपकर
त्तिहेअधिकमनसिजपुलिंदिनि ॥ गोविंदप्रभुको
जुअमृतवेनुसुनिथकितप्रवाहकुरंगिनि ॥२॥
॥ ॥ रागकेदारो ॥ आजुसखीअतिबनेरीगिरि
धरन ॥ निरखितबदनगगिरहीसखारीसिथ
लभईगतिचरनि ॥ १ ॥ कसूंभीपागलटकिरहीआ
धेसिरसुरतचारूअवतंसकरनि ॥ सिंघद्वारठा

॥गोवि॰॥
॥९६॥ टेपियमोहनंश्रीरामाऽंसभुजधरन॥२॥चंपक
कुसुममालहदेले बितऋरूपतिछबिपीतनु
परनांफहरैरन॥गोविंदप्रभुचितचोखोराचि
तेकरिईखदहासत्रिलोकीजुवतीमनहरन॥३॥
॥ ॥९७॥रागकेदारो॥इकताल॥बुनेलालनगि
रिधारी॥नवलनिकुंजबिहारी॥अंगअंगपरम
नमथकोटिवारोडारी॥१॥संगनवलनागरीव

112

षभांनकुमारी॥सुरतिकेलिअंगअंगसुखकारी॥ग्रथितबेनीप्यारीचंपकजातिनिवारीपरसतउरफुल्लकिभरतअंकवारी॥२॥कंनसुघरभारीमधुरतालसंचारीदंपतिरागरंगराख्योभारी॥तातेंजनगोविंदबलिबलिहारी॥३॥

॥१९॥रागकेदारो॥अतिताल॥कहंबबीथिनिकरतबिहार॥अतिरसभरेंमदनमोहनपियातो।

गो०वि०

। ३ । सो प्रिया उर हार ॥ १ ॥ कनक भूमि विथुरित गज
मोती कुंज कुटी के द्वार ॥ गोविंद प्रभु सुंदर सु हस्त
पोहत व्रज राज कुवर ॥ २ ॥ ॥ ११ ॥ राग केदारो ॥
मिले पीय सांकरी गली ॥ मदन मोहन पीय हसि
गहि डारी मो तन चंपकली ॥ १ ॥ वारिज बदन दे
खि उमंगि चले घूंघट में न समात नैंन अली ॥
गोविंद प्रभु दंपति परस्पर है रस मत्त अली ॥ २ ॥

॥ ॥१२॥ राग केदारो ॥ आडताल ॥ आगें चलि

प्यारी री जहां सघन नवलनिकुंज भरे ॥ कर सों क

चलकर खिगहत सुजांन सुंदर प्यारे ॥१॥ निकट

सरिता समीर सीतल री जहां कोकिला कलरव

मोर करत अखारे ॥ बांह जोटी रसमत्त मद गज

चलत अति छबि तातें गोविंद बलि बलि हारे ॥२॥

॥ ॥१३॥ राग केदारो पंचताल ॥ कौंन काज आली

गोविं

२९ री तेरूसमों गान्यो ॥ हंसतखेलतनी केरंगही मेंक
खु जग दीसजां ने विधाता जू रसां च कोटि मनमें
री झानी ॥ १ ॥ गुनरूपरेखसुहाग सुंदरि एकहू
छु विपरजुगि रिधरपियचों पसों जान्यो ॥ गोविंद
बलि सखा कहे जुवती नि सिर मोर तेरो सुहाग
सेससहस्त्रमुखजाइनबखान्यो ॥ २ ॥ २१ ॥ राग
केदारो ॥ प्रियसिमनावतकुंजबिहारी ॥ वृथामो

114

करतरहतनमितमुखनेकुचितैइतप्यारी॥१२॥नु

वमुखचंदचकोरनेनमेरेप्याइरी॥सुधाबलिहा

री॥रहीहुहोममछाइबिरहतबनेऊबोलिजै

सेंहोइदसनचंडिकाउजियारी॥१३॥ज्यौंअतिगु

पतकरहिंभुजबंधननखसरहदोबिदारी॥गो

बिंदप्रभुकेप्रेमबचनसुनिछांडिमानकंठला

गीकुसुमकुसुमारी॥१४॥ ॥२५॥रागकेदारो॥

॥गोविं॥
॥२६६॥

मोहन मुरख बेनु बाजे मंद मंद रकल ॥ वाम भुज पर वाम कुंडल नत सतभुव अति चपल ॥ १ ॥ मोहन व्योम विमान बनिता छूटत नीवी सुधि न अंचल गोविंद प्रभु के तरु नमे रमा स्ते वि घूर्णित लोचन युगल ॥ २ ॥ १६ ॥ राग केदारो पट ताल ॥ कमल बदन ऊपर बैरे बरी मानो युगल खंजरी ॥ ताऊ पर मानो मीन चपल अरु

ताकूपरफूलवलीगुंजरी॥१४॥ओरऊँसोछबि
राजेमानोउदितरबिनिकटफूलीबकरतीक
दंवमंजरी॥गोविंदबलिबलिसोभाकोंनींब हां
रनोंमदनकोटिदलुगंजरी॥१५॥१७॥राग
केदारो॥जतिताल॥नेंन्हीं२वूंदनिहोब
रसेसघनघटाघनघोर॥चहुंदिसतेंमंदमं
दतेसीएकनकचित्रसारीपोढेपियप्यारीते।

गोविं॥
२००

सौदामिनी अतितरसे॥२॥ तैसेई दादुर मोरकोकिलाकेकी करत रोरउरगत मकछो लदंपति अतिजियहरसे॥ गोविंदबलि दोऊ गावत सुघर मिलि रायुके दारो अति तांनसरसे॥३॥१९८॥

रागकेदारो॥ मदन मोहन संग मोहनी कुंज सदन मे विलसत नव रंगे॥ पिउ प्यारी प्यारी पिय पिया पर लटपटाइ पागे आधे२ बचन

॥१६

कहत मते अनंगे॥३॥ परसत नख चिबुक बिं
दु निरखि रहत बदन इंदु हसि हसि गिरिजा त
क बहूं पिय सिउ छंगे॥ गोविंद प्रभु सरस जो
री नव किसोर नव किसो गावत मिलि राग के
दारो मधुरी तान तरंगे॥४॥ ॥२१॥ राग केदा
रा॥ जति ताल॥ आजु बनी कुंजेश्वर रानी
चिकुर चारु सिर सिथल सगबगी ओर ओ

गोविं॰ ॥
१०१ ॥ र कुसुम विविधि बेनी बांनी ॥ १ ॥ मेन सुरंगगि
रिधर रस माते कमल खंज न सोभा वि लखां-
नी ॥ गोविंद प्रभु कों तत्याय बस करे धनि धनि
री विधाता आपनी चतुरी सकल तो ही में आनी
॥ २ ॥ ॥ २० ॥ राग केदारो ॥ रस भरे दंपति कुंज मह
ल सुर तर सि ॥ नव संग मय हृदय घूंघट पट त्र्प
व लोकनि ईख दहास हसी ॥ १ ॥ श्याम भुज बीच-

117

प्यारीवदनबिराजत मानोंजल धरतें निकसो

पूरणससि॥ अमृतश्रवतवचनकिरनपियप

रगोविंदप्रभुकीनेसुहागसुबस॥१॥ ॥२॥ राग

केदारो॥ इकताल॥ ॥ एसीबनारिकोंनविभु

वनमेंदेखतसुनतजाकेरूदेनडुलेरी॥ मदनमो

हनपियचालचापतेंमुकुटकटाछबानयतिब

नकवचफूटिमरमछेदी॥१॥ सुनतबेंनमोहीदे

गोविं॥
॥१२॥ ववधसहपतिमोहनतानउनकेजियमेंभिदे
री॥ गोविंदबलिउनकीकहाचलेखगमृगजु
मपसुसरितामनजुथिदेरी॥२॥ ॥२२॥ रागकेदा
रो॥ अरताल॥ अरीमेरीआलीरीलललनुसुमुख
मनावेंमेंमनायोनमान्यो॥ हंसतदंतइतिजलप
तिसुंदरीपियसखीवचनपथनहींजान्यो॥१॥ सुं
दरकरग्रंथिजायेरीमालासोतोमेंपरसीनहींपा ९१

त्यों ॥ देत केसधं रिचरनपरस तपियताऊपर
मेंमान बितान्यो ॥ २१ ॥ मुरछिधरनिपरी बुजसुं
दरीपियकेरूपमेंमनुजस मान्यो ॥ गोविंदबलि
इमकहतिप्यारीतुंबेगिलाइ कुंवरबजरान्यो ॥ ३ ॥
॥ २३ ॥ रागकेदारो ॥ आवतहेंबनतेंब्रजकोरी
गोधनसंगे ॥ मधुव्रतमधुमातेंकृतिदेंतमुरली
बाजेतानतरंगे ॥ १ ॥ पीतटिपारोअरुलालकाछि

॥गो॰वि॰॥
१०३ कटिबनजधातुविचित्रतनसोहतसांवलअं
गे॥गोविंदप्रभुपियसखाअंसभुजधरेंफेरतक
मलगावतकृतिउतंगे॥१॥२६॥रागकेदा॰खरि
कदुहायकेंआवतसबव्रजबधूवछनवृपतिसुत
गहेरोकेंमथुरी॥एकचलीमुखमोरितोरितिनु
एककहतिनिसुदिनुइहहन्हेरगुरी॥१॥मखटू
ठीइंडुरीमोतिनकीझालरिरूमेरूमकरुमकच

लति धरति गति भेद प गुरी ॥ गोविंद प्रभु सों इमक
हत परस्पर ए तो दिन महीं के भले बडे न गुरी ॥ २ ॥
॥ २५ ॥ राग केदारौ सो भा कही न जाइ बन तें आव
नी ॥ पीय सखा भुज अंस धरें लटकत चलत चा
ल गज मधुर मधुर सुर गावनी ॥ १ ॥ मुरित सखा
सति हेत मधुप न मंद मंद मुरली बजावनी ॥ बु
ज जन उमंगि चले गोविंद प्रभु देखन को निरखि

गोविं ॥

२९६ मदनतापनसावनि ॥ २॥ ॥२६॥ रागकेदारो ॥ आज
मेरेगोकुलचंद ॥ बडाबारखेलतजमुनातटवदन
दिखाइदेऊआनंद ॥ १॥ गाइनुआवनकीभईबेर
दिनमनिकिरनिभईअतिमंद ॥ आएतातमात
छतियांलगेगोविंदप्रभुब्रजजनसुखकंद ॥ २॥
॥ २७॥ रागकेदारो ॥ जनितातेकेसरितिलकललाटना
अतिराजे ॥ कपोलकलकपरमनमथकोटिवारोंभ्र

120

वनखचितनगकनकबिराजे ॥ १ ॥ कुटिलस्यकच्छ

विमनऊंसुभगस्फटिकमस्तबदनपररहेलुभाइ

मन्नमधुकाजे ॥ गोविंदवलिबलिबानिकपरमोति

नमालकंगकौस्तुभमणिभ्राजे ॥ २ ॥ ३५ ॥ रागके

दारो ॥ नंदराइछांडोबलिजांऊंवृजराजलाडिलेल

डेते ॥ ज्योंज्योंबचनपियमदनमोहनत्योंत्योंहोत

बडेते ॥ १ ॥ देखतसकलवृजवमेंतोसकुचनहीमा

॥१०५॥ नतएबातेंतुह्मारीपियरावकुसेतें॥ हतीसोंसेनदे
हसिकहतगोविंदप्रभुचलिरीजाईजहांसरोवर
तीरकुंजहोइआवतचंपककीथिनिगहेपाछेतें
॥२॥ ॥२॥रागकेदारो॥ताल॥अहोपियकैसेकेंध
रतम्हंउचरनधरनि॥ गिरिकीकांकराअतिकठि
नतएअंकुरररसधरिजेयहमुधिकरिकरिछाति
यांजरति॥१॥सरस्तिसुजातगरभकीश्रियमुसत

हमारे कगिन उर सहे साहीनं घरिसकेडर नि॥ गो
विंद बलिइम कह त पियारा तुम हीजीवनितनपु
लकित प्रेम अस्त्र आंढरनि॥२॥ ॥३॥ ॥ रा
गकेदारो॥ बिधाता बिधिनजांनी॥ सुंदर बदन
पांनकर तरे मरोमप्रतिनें नदीये क्योंनरी करि
यतबात अयांनी॥१॥ श्रवन सकल वपुजो होते
रीसुनत पियमुख अमृत मधुर बानी सुजाको॥

॥गोविं॥
२५६

दिकोरिहोइतोभेटोंगोविंदप्रभुतकअनमनुनआ
घायसयांनी॥२॥ ॥३१॥रागकेदारो॥पदताल॥क
हाकहिबरनोंरीबतेरेबदनकीजोती॥श्रमजलक
नछमविराजतरीमानोंपूरनससिखचितमोती
॥१॥सेतपीततामेंअरुणाईदीनीमानोंसुहाग
कीपोती॥गोविंदसखीकहेउवपटंतरकोंनाहि
नेत्रिलोकीजुवतिस्त्रियनकरिसकेतोसोंदोती

॥१॥ ॥३२॥ राग केदारो ॥ इकताल ॥ मेरो मन नमो
होरी नागर ॥ कैसे कें धीरज धरों सुनि मेरी आली
री बिनु देखें न रह्यो परे ॥१॥ चितवन चल निहंस
नि छबि बरखत री सकल कला गुन को आगर
॥ गोविंद प्रभु मदनमोहन मोहिनी पिय जकीवी
ति उजागर ॥२॥ ॥३३॥ राग केदारो ॥ गर बगहे
ली गुजरीया ॥ ऊतरों न देत हैं चलति गजगति गो

॥गो०वि०॥

१०७ रसकीमाती अतिरंग ॥१॥ दिन दिनदान मागिगई है

रीएसैं कबहूं पालैनहीं परिया ॥ गोविंदप्रभुक

हे सखवनिसों घेरो घेरोतब धाइ अंचलधरिया

॥२॥ ॥३ध॥ रागकेदारो ॥ पदतीन ॥ घेरो हे लाल

अपनी गैयां ॥ नेकु मुरली बजाइ सुनाओ म

धुरसुनतवेजहां तहां तें आई सबै धैयां ॥१॥

बरतचरतहरगई है वियतनाहींहरितकोम

नतरुण देखे तेरही हेतु मैयां ॥ गोविंदप्रभु कंचेच
टिहे रिटेरि बोलो भई अवार बगदावकुनांतरु
खोज हिंगी रानी मैया ॥२॥ ॥३५॥ रागकेदारो ॥
अखियनि हो लागी रहत ॥ अबकहा करौं आली
॥ निसुदिनु रहति रूपरस माती आवैनगटहका
जेकरत ॥१॥ जदपि मात पिता गृहपति जानतरी
तोऊ कैसे कें धीरजु धरों मोहन बेनु सुनत ॥ गोवि

गोविं॰॥
१०८ दप्रभुजौं लोंनदेखोंरी आलीतोसों छिनुछिनुग
भरिकैसेंमेरेप्रानरहत॥२॥३६॥राग केदारो॥दे
खतरूपरगोरीलागीनेनरहैअरूझाई॥ठगटगी
लगनमुखनिरखतनागरीअनुरागी॥१॥विथकि
तभईमारगमेंसुधिनगातकुलपतिभयभागी॥
गोविंदप्रभुदंपतिदंपतिरसप्रेमपागी॥२॥३७॥
॥रागकेदारो॥जतिताल॥मोहनमोहनीमोपरघाली

॥ छिनुछिनुपलुपलुजुगजुगजातबिनुदेखेंमो
हिश्यामसुंदरकहाकरूंमेरीआली ॥ २ ॥ सुनतह्
नसुनतदेखतकछुकीकछुकहतफिरतडोलन्न
चलीचली ॥ एतेपरप्रांनतजिहोंमेरीआलीबि
नुमिलेरीगोविंदप्रभुयहबातनभली ॥ ३ ॥ ३०
रागकेदारो ॥ झपताल ॥ रसभरेंपियप्यारीबैठेकुसु
मभवन ॥ कुसुमकीसेजनवकुसुमवितानतरे

॥गोवि-१॥

१५१ तेसोईसीलतसुगंधमंदवहतपवन॥४॥कुसुम-
निकेभ्रवनकेपरहाकुसुमनिकेबिंजनागुंजतअ-
तिपिकरीसुखभवन॥गोविंदबलिजोरासदाई-
बिराजोतातेंमुखबरखतलालनराधिकारवन-
॥४॥ ॥३५॥रागकेदारोकोंनपै[illegible]ईतुम्हारीजुग- त
मीगीबतियां॥तेसेईसावरतनतेसोईसांवरमन-
नहीमेजानेजानतहोपायकुंवरनिपुनसभबति-

यां।१।मुंहकीहमसोंमिलवतजियकीओरनि
सोंजांनेंपियत्रियनिमारनकूंभलीपढीयेबति
यां।।नेंनसोंनेंनमिलतमानछूटिगयोअतिमु
दितदंपतिगोविंदप्रभुपियप्यारीलाइछतियां
।२।।६०।रागकेदारो।।अंगअंगसुदरलखना
रीबलिबलिबानिकपर।।मनोगजराजकलभ
अतिमद ।गलआवतलटकतधुनतकर।१।

॥गोविं॥

२१० अलकावलि बिच कुसुम बिराजित मृगमद ति
लक खुल्यो कंठ मोतिन लर॥ नैंन बिसाल कृपा
रससिचलित गोविंदप्रभु छबि लागत री घोरव
राजलाडिलै कुवर बर॥१॥ ॥६१॥ राग केदारो
॥जतिताल॥ बनतें बनें आवत गोधन संग॥ गोर
ज छुरित कपोल अलक जु कृपारस नैंन सुरं
ग॥१॥ लाल काछ कटि पीत रूप रतनां बनजु धा

तसोहेअंग॥ दर्सनीयवनमालतिलकपरवारों ९

कोटिअनंग॥ सोसुरनिदेतकुसुमानुगतिमुरली

बजावततानतरंग॥ गोविंदप्रभुकेअंगअंगसु

दरसीवांलहरतरंग॥३॥ ॥धरागकेदारो॥

बोलतचलिब्रजराजकुमार॥ बैठेपियानवनिकु

जघन॥ रसिकराइमनमोहनलालप्रतीतजुमा

नुमिलिबेगिकुसुमसुकुमारतन॥१॥ जमुनाज

॥ गोविं० ॥

१११ लतरंगसुनिसजनीरी सीतल समीर बहे मंदमंद

विविधकुसुममकरंदपांनुकरिमत्तमधुपगन ॥

॥ १ ॥ निबिड कदंबकोकिलाकलरवते सोईउदित

उडराजबररवतसरदसुधाकिरन ॥ गोविंदप्रभु

रीझिहदेसोंलगाइलेहेरसिकराइश्रीनंदनंदन

॥ २ ॥ ॥ १२ ॥ रागकेदारो ॥ अंगअंगमनकोबमो

हनी ॥ कुलहसुरंगकुसुमनिभरिलरकतकस्त्र

भीपागचोकरीनुसोहनी ॥१॥ स्निग्धनिबिडअल

लकावलिक्सतिछबिबिचबिचचंपकलीनुपोंह

नी ॥ खरिकसिलागढेदेखेगोविंदप्रभुबिकल

भईप्यारीभवसतकरतेंनगरोंहनी ॥२॥ ॥ ६६ ॥

॥ रागकेदारो ॥ इकताला ॥ ॥ कहाकहोंमोहनमुख

सोभा ॥ बदनइंदुलोचनचकोरमेरेपीवतरूप

किरनरसलोभा ॥ १ ॥ अंगअंगनछलितरूपछटा

॥गोवि॰॥

१९१ मैंकोटिमदनउपजततनगोभा॥गोविंदप्रभुदेखें

बिवसभईप्यारीचपलकटाछिलग्योहदेचोभा॥

॥४॥ ॥धंप॥रागकेदारो॥पोढेमाईलालनुसेजसु

खकारी॥रतनखचितसारोटेंबैठेगेपियाचांपतिच

रनहृखभानकुमारी॥१॥चरनकमलकुचकमैल

सनिपरधरिअंगअंगपुलकितब्रजनारी॥करि

करिबीरीखवावतिपियकोंमधुरबचनबोलत

मनुहारी ॥ शि ॥ कंगलगाइभुजादे सिरहांनेअधर र-
पांनसुखकरतप्यारी ॥ रीझिउगारदेतगोविंदप्र
भुसुरततरंगरंगरसोभारी ॥ शि ॥ ६६ ॥
॥ रागकेदारो ॥ चर्चरीताल ॥ राइगिरिधरनसंगरा
धिकारांनी ॥ निबिडनवकुंजनवकंजसज्यार
चीनवरंगपियसंगबोलतपिकबांनी ॥ शि ॥ नील
सारीलाल कंचुकीगोरतनमांगमोतिनखचित-

११३ सुंदरसुगंनी ॥ अर्द्धघूंघटलन्नवदन निरखत
रसिकदंपतिपरस्परप्रेमरूहेसांनी ॥ २ ॥ लाजत
नसुखपागलटकिसिरपररहीकुलरूचंपकभरि
रीसेहरोबांनी ॥ पांनिसोंपानिगहिरूहेसोंलाव
तिगोविंदप्रभुव्रजजनपति सुरतिसुखदांनी ॥ ३ ॥
॥ ६७ ॥ रागकेदारो ॥ पटताल ॥ कोंनकाजमाईरातें
रूसनोंगन्योंनतेबावरीभईरीप्यारी ॥ मदनमोह

129

नतुवआननकोंवेगकरतध्याननवलकुंवरवि
हा॥१॥सीतलसीव॥ मंदमंदवहतपवनगुंज
तअलिपिकरी॥ वननिकोंअतिसुखकारी॥
गोविंदप्रभुवलिसखीकहे पियाकीभांवरितो
सोंतोकहांलोंवरनोंरसवसकीयेगिरिधारी॥
॥१॥ ॥छंदरागकेदारो॥भलेकहेलालनरा
गकेदारोसुंदरश्यामसुघरमधुरतांनतरंगर

॥गोवि॰॥
॥२७५॥ ह्यो भारो ॥१॥ मोहन मुरली मैं लेत सुघर स्वर ब्रजको
प्यारो ॥ गोविंदप्रभु सों प्रेम करहति प्यारी तनकोउ
जियारो ॥२॥ ॥२७६॥ राग केदारो ॥ ईकताल ॥ मांन
गढ क्यों हूं नहीं छूटत ॥ अबलाके बलको प्रताप
॥ आपुन दौवा चढे गिरिधर पीय अब लिं चाल
चाप तें घूंघट टरवा जो नहीं छूरत ॥१॥ विविध प
नति हय नाल बोल गोला उचटि परत को धको

टनहीं कूटत॥ गोविंदप्रभुसामदानभेदकर
कुछेहेरिपसौंचहूंदिसअतररवाईसंचितजल
कोंहूंनहीरवूटत॥२॥ ॥५०॥ रागकेदारो॥च
र्चरीताल॥ नंदनंदनआजुअतिविराजे॥ मुकु
टसिरदपतमनिमालहीराखचितनगमगनि
जोतिससिकोटिसमभ्राजे॥१॥ छुरितगोरजअ
लकग्रथितस्तबकतिलकम्रगमदललितभा

॥गाथा॥
॥२२५॥ नराजे॥ सुचापनिहेतिसरवीविसेरवस्रवलो
कनिदेखिमनमचकोटिकलभभाजे॥२॥ दस
नचमकतत्र्यधरंगराजतत्र्यसरु कंगकोसुभ
नसतननमालभाजे॥ श्रवणकुंडलउरसिहा
रविभ्रतसखीकुनितकंकनरानितकिंकिनी
साजे॥३॥ वामदक्षिनमधुपजपश्रुतिदेत[illegible]स
खी॥ गोविंदप्रभुउपामनुरवकमलमधुकाजे॥

131

॥धो॥ ॥५१॥ ॥राग केदारो॥ राखीहो अलक

बीचचंपककलीगनिगनि॥ जगमगातहीरालाल

कुलहपरपागचोकरी अतिबनी॥१॥ सुभगने

नतरूनमदमातेमुसिकातअतिअनि॥ गोविं

दप्रभुसबअंगसुंदरब्रजराजकुंवरबलिधनि

धनिहोधनि॥२॥ ॥२५१॥ इतिश्रीगोविंदस्वामी

कृतहोयसेबावनकीर्तनसंपूर्णम्॥ ॥२५१॥ ॥

स
के

कवित॥ आऊँ न वनीत प्रिय वौई और मधु
रे सदाई और विठ्ठलेस वन्यो व्यात प्राशीट
गोकुलेस विठ्ठलेस द्वारिकेस मोहन तेसो
श्रेष्ठ पायो दरस प्रवीन सुख कारी है॥ गो
कुलेचंद मधुरेस जेकी वौई और दोऊ हैं न स्व
रूप मन मोहन विहारी है॥ मानोई इंदु विठु

133

नमें वं द्रमाविराजतैः राजेश्रुभकंद मुखवंदगिरि
धारीहैं॥॥॥

138

135

140

141

142